ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जून 2015

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

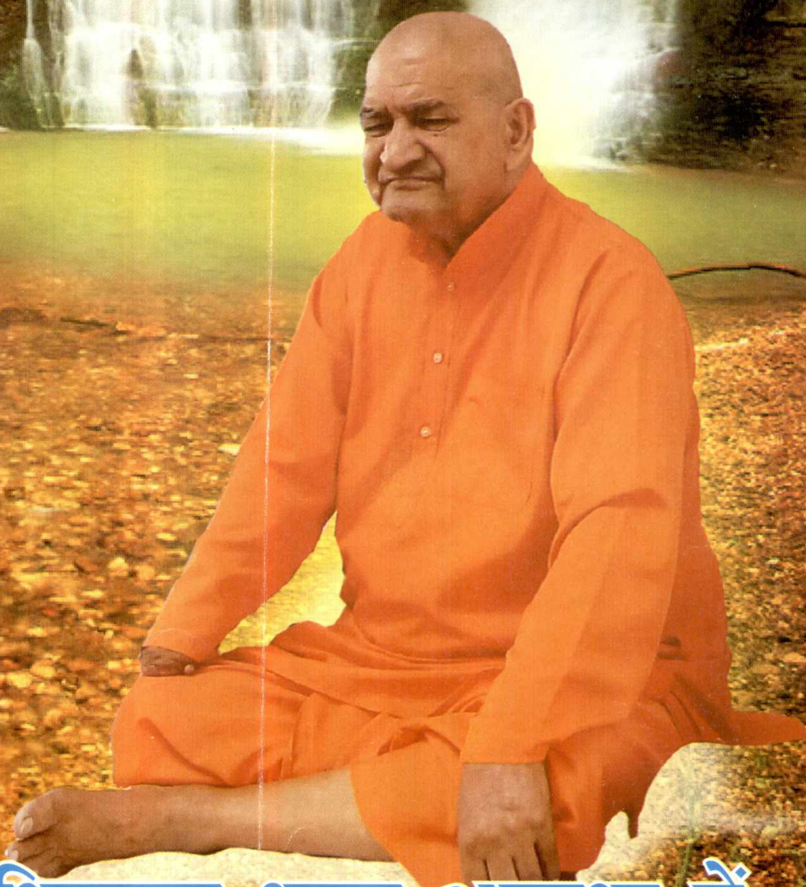

मुख्यअधिष्ठाता ध्यान अवस्था में

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

ओ३म (विवरण पृष्ठ 4 पर)

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

894

श्री सुरेन्द्र दहिया
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

(विवरण पृष्ठ 23 पर)

प्रिय बन्धुओं! मास जून में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जुलाई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

\- व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

ज्येष्ठ-आषाढ़ सम्वत् 2072 जून 2015

सृष्टि सं. 1972949116 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-14) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-6

(वर्ष 45 अंक 6)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	5
सम्पादकीय : रहस्यात्मक जीवन	6
जीवन की पूर्णता के लिए ढीला करना पड़ता है.....	7
वेद पारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का औचित्य और...	10
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	13
वीर सावरकर पर विशेष	16
विश्व को जरूरत है नारी के श्रद्धासिक्त अभिसिंचन....	17
किशोरावस्था में प्रजननः स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव	19
हंसो और हंसाओ	23
स्वामी श्रद्धानन्द व ईसाई प्रचारक	23
आसक्ति रहित होने पर प्रभु की प्राप्ति होगी	24
ओ३म् नाम जप ले	25
गरीबी	25
गोस्वामी तुलसीदास और चोर	26
क्या किसी विशेष कार्य के लिए यात्रा पर जाते समय...	27
देश विभाजन की घोषणा का काला दिवस	31
दान सूची	32

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

यज्ञ की वायु में ओजोन का भंडार: मैत्रेय

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत यज्ञ-प्रवचन आयोजित

वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के तत्त्वाधान में मोहल्ला कानूगो स्थित समिति कार्यालय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत यज्ञ, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य राजहंस मैत्रेय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के ब्रहमत्व में 51 बेटियों द्वारा सामूहिक यज्ञ कराया गया।

यजमान राजन कौशिक एडवोकेट व कविता रहे। मुख्य अतिथि प्राचार्य एच.एस. यादव रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित रमेश चंद्र कौशिक ने की। आचार्य मैत्रेय ने कहा कि यज्ञ की सुगंधित वायु में ओजोन का भंडार होता है जो कि एक प्रकार की तीव्र आक्सीजन है। जिसके सेवन से रोग मुक्ति व आनन्द प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि बेटी में करूणा, दया व ममता होती हैं। बेटी में मातृत्व शक्ति होने से बेटी व नारी जाति महान होती है। बेटी बेटों से ज्यादा आज्ञाकारी होती है। इसलिए बेटी बचाना बहुत जरूरी है। पंडित रमेश चंद्र कौशिक ने कहा कि नारी जाति की सुरक्षा, सम्मान की रक्षा हमें करनी चाहिए। भूकंप पीड़ितों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की गई व

मृतकों को श्रद्धांजलि दी गई। बेटियों को सम्मानित किया गया, जिसमें वैदिक साहित्य व सम्मान राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर जागरूकता रैली भी निकाली गई जिसका नेतृत्व एच.एस. यादव, रमेश कौशिक व पंडित जय भगवान आर्य ने किया। कार्यक्रम में सितारा देवी, रीना देवी, सोनिया देवी, सुषमा, सविता, अलका, सीमा, बरखा, पूनम, सूबेदार, भरत सिंह, भगवान सिंह, रतिराम, ओमप्रकाश यादव, कृष्ण शास्त्री, द्वारका प्रसाद प्राध्यापक, सुभाष आर्य, रंजन, लक्ष्य, प्रज्ञात, शिवम, कनिका आदि बड़ी संख्या में महिला पुरुष व बेटियों शामिल हुई। कन्या भ्रूण न करने की भी शपथ दिलाई गई।

फर्रुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग दिनांक 9 मई 2015 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। सायं 4 बजे आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। मन्त्रपाठ आश्रम के छात्रों द्वारा किया गया। विभिन्न यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। वानप्रस्थी सौम्य मुनि जी, द्वारा सुमधुर एवं प्रेरणादायी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। तत् पश्चात् आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत करते हुए आध्यात्मिक, सामाजिक विषयों पर प्रभावशाली प्रेरणादायी सुन्दर विचार रखे। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु व्यक्ति उपस्थित रहे। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

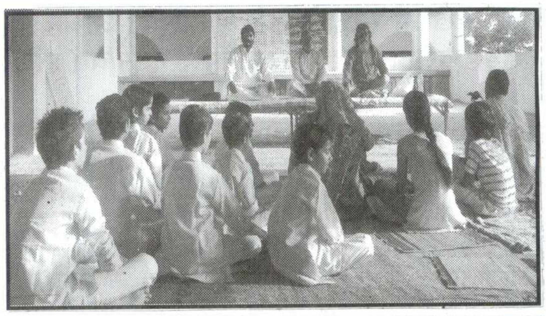

चुनाव सम्पन्न

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर कार्यकारी समिति का चुनाव इस प्रकार हुआ।

प्रधान- रमेश चन्द्र कौशिक, उपप्रधान-सूबेदार भरत सिंह, महासचिव- पं. जय भगवान आर्य, संयुक्त सचिव-सुभाष आर्य, कोषाध्यक्ष-भगवान सिंह आर्य।

आर्य और दस्युओं को पहचान

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो,
बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता,
विश्वेत् ता ते सधमादेषु चाकन॥
ऋग् 1.51.8

ऋषिः सव्यः **आङ्गिरसः**। देवता इन्द्रः। छन्दः **जगती।**

(हे इन्द्र राजन!) **(आर्यान)** आर्यों को **(ये च)** और जो **(दस्यवः)** दस्यु (हैं, उन्हें) **(विजानीहि)** विश्लेषणपूर्वक पहचान। **(शासत्)** शासन करता हुआ (तू) **(बर्हिष्मते)** राष्ट्रसेवा-रूप यज्ञ के अनुष्ठाता के हितार्थ **(अव्रतान्)** व्रतहीनों **(रन्धय)** दंडित कर। **(शाकी)** शक्तिशाली (तू) **(यजमानस्य)** यजमान का **(चोदिता)** प्रेरक (भव) हो। **(ते)** तेरे (ता) उन **(विश्वा इत्)** सभी (कर्मों) की **(सधमादेषु)** उत्सवों में **(चाकन)** स्पृहा करता हूं।

हे इन्द्र! हे राजन्! यदि तू अपने साम्राज्य का सफल अधिनायक बनना चाहता है तो सर्वप्रथम तुझे आर्य और दस्युओं में विवेक करना होगा। दस्यु लोग भी प्रायः छल प्रपंच से ऐसा आर्य का रूप धारण कर लेते हैं कि उनकी पहचान कठिन हो जाती है। बाह्य रहन-सहन, आचार-व्यवहार आदि आर्यत्व या दस्युत्व के परिचायक नहीं है, प्रत्युत तुझे प्रत्येक जन के आन्तरिक हृदय और उसके द्वारा किये जानेवाले प्रच्छन्न कार्यों पर दृष्टि रखनी होगी। आर्य का हृदय सरल होता है, उसकी कथनी और करनी में तथा अन्दर और बाहर में कोई भेद नहीं होता है तथा वह सेवाव्रती होता है। इसके विपरीत दस्यु कपट-हृदय, अन्दर-बाहर से भिन्न और सेवाव्रत-हीन होता है। राष्ट्र में आर्य और दस्युओं का विवेक करके तू व्रत-हीनों को दण्डित कर जिससे राष्ट्रसेवा रूप यज्ञ के अनुष्ठाता आर्य जन तेरे राज्य में पनपें।

हे राष्ट्रनायक! तू शक्तिशाली बन, अपनी सैन्यशक्ति, प्रभावशक्ति और राज्य कोष की शक्ति को सुदृढ़ कर, जिससे तू राज्य के अन्दर व्याप्त तथा बाहर सिर उठाने वाले शत्रुओं का मर्दन कर सके। तेरे राज्य में जो यजमान हैं, यज्ञशील जन हैं, उनका तू प्रेरणादायक और उत्साहवर्धक बन। अन्यथा यदि सच्चे सेवाव्रती राष्ट्रभक्त, धर्मपरायण, सन्मार्गगामी, सदाचारी, दूरदर्शी, विवेकी, राष्ट्रोत्थान में सहायक व्यक्तियों की तू उपेक्षा करेगा, तो उससे लाभ उठाकर अवांछनीय प्रवृत्तियोंवाले लोग सिर उठायेंगे तथा तेरा राज्य विश्वविखलित हो जायेगा। अतः सावधान रहकर तू कर्त्तव्य का पालन और अकर्त्तव्य का परित्याग करता रह। तब तेरा राष्ट्र चिरविजयी, चिरस्थायी होकर चिरप्रशंसित बना रहेगा। तब हम प्रजाजन उत्सव रचायेंगे, संगोष्ठियों का आयोजन करेंगे और उनमें तेरे स्वागत गीत गायेंगे, तेरा अभिनन्दन करेंगे, तेरी स्पृहा करेंगे, तेरा गौरव-गान करेंगे।

हे आत्मन्! तू भी इन्द्र है, तू शरीर राष्ट्र का राजा है। तेरे अन्दर जो आर्य विचार और दस्यु विचार उठते हैं, उनमें तू विवेक कर। दस्यु-विचारों पर वज्र-पात कर और आर्य विचारों को समुन्नत कर। तेरा भी यशोगान होगा।

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :
राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

सम्पादकीय

रहस्यात्मक जीवन

मानव जीवन बड़ा ही रहस्यात्मक है इसे समझने के लिए बहुकाल से दार्शनिक, वैज्ञानिक और योगी लोग प्रयासरत हैं। फिर भी इसकी पूरी जानकारी उपलब्ध हो गयी है ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि इसके सम्बन्ध में कुछ जानकारी उपलब्ध हो पायी है तो वह भी रहस्यात्मक ही है। इसलिए इसे एक विचित्र रहस्य ही कहा जा सकता है जीवन एक अनवरत श्रंखला है इसके तार अतीत वर्तमान और भविष्य में जुड़े रहते हैं। इसलिए इसके मूल स्वभाव को सम्यक्तया जान पाना असंभव तो नही। परन्तु जटिल अवश्य कहा जा सकता है। मानव जीवन तो समस्त जीवन की एक कड़ी है जिसको पाकर मनुष्य अपना उच्चतर विकाश कर सकता है। केवल मानव जीवन को देखकर उसके सम्बन्ध में कुछ जानकारी एकत्रित कर लेना उसे जान लेना नहीं है। यदि कुछ जान भी लिया जाता है तो उसके रहस्यमय होने से पर्दा उठ जाना नहीं है। समस्त ज्ञान की प्रक्रिया को तीन भागों में बांटा जा सकता है ज्ञात, अज्ञात और अज्ञेय। ज्ञात का अर्थ है जो ज्ञान लिया गया है, अज्ञात का अर्थ है जो अभी नही ज्ञाना गया है। जो जानने के लिए शेष हो और जिसे जानने के लिए उत्सुक हैं। अज्ञेय का अर्थ है जो जानने के बाद भी जानने में नही आता। कितना भी जाने फिर भी जानने में नहीं आता अर्थात् जो जाना ही नही जा सकता। यदि जान लिया जाता है तो वह ज्ञात हो जाता है। अज्ञात ज्ञात हो सकता है परन्तु अज्ञेय ज्ञात नहीं हो सकता क्योकि अज्ञेय स्वयं एक रहस्य है और रहस्य सदैव रहस्य ही रहता है वह कभी ज्ञात नहीं हो सकता। इसलिए मानव जीवन स्वयं एक रहस्य है इसके सम्बन्ध में अनेकों ऋषियों मुनियो ने बहुत सी कल्याण प्रद बातें कही हैं। नियम दिये हैं। सिद्धान्त दिये हैं। और वे सभी अन्ततः रहस्य में परिवर्तित हो जाते हैं। क्योकि जो अनादि है वह स्वयं में एक रहस्य हो जाता है। ऐसे ही जब भी किसी विषय पर चर्चा करते है तो उसकी कुछ दूरी तक तो जानकारी ठीक उपलब्ध होती जाती है फिर वह अनादि अनुपम, शाश्वत में परिवर्तित होकर अन्ततः रहस्य में परिवर्तित हो जाती है।

समस्त ज्ञान विभाजन की दृष्टि से ज्ञात, अज्ञात, अज्ञेय इन तीन सम्बन्धों में यात्रा करता है। मनुष्य जाति ज्ञात से सन्तुष्ट नहीं है जितना वह जानती है थोड़ा है इसलिए हर व्यक्ति कुछ भी जानने के लिए उत्सुक रहता है। वह अपने ज्ञान को और बढाना चाहता है उसे जो अज्ञात दिखाई देता है उसे जान लेना चाहता है और वह समझता है कि मै सब जान लूंगा। इसलिए अज्ञात उसके लिए एक चुनौती बना रहता है। और चुनौती सभी ज्ञानियों के लिए रस पूर्ण है इसलिए सभी वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तक उस अज्ञात को ज्ञात में परिवर्तित करने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। जहां तक अज्ञात, ज्ञात होता जाता है, उतना ही शेष रहता जाता है वह भी अनन्त की श्रंखला में पहुच जाता है सच तो यह है कि अज्ञात को जाना सकता है परन्तु अज्ञेय को नही, अज्ञात का अन्तिम शिरा अज्ञेय में पहुंच जाता है और हम केवल अज्ञात को ही जानते रहते हैं। अज्ञेय में तो कभी उस व्यक्ति की छलांग लगती है जो अज्ञात को जानने की इच्छा खो देता है। अज्ञात को जानने की इच्छा के समाप्त होते ही व्यक्ति अज्ञेय में स्थापित हो जाता है और अज्ञेय का अर्थ है व्यक्ति कितना भी जानने की कोशिश करे फिर वह जानने में नही आता। वह सदैव रहस्य ही बना रहता है जो भी जाना जाता है वह अज्ञात का ही अंश होता है। जब जानने के बाहर होता है तो व्यक्ति प्राप्त ज्ञान के बाहर हो जाता है और वह अज्ञेय में स्थापित होता है जिसे जाना ही नहीं जा सकता। वह सदैव रहस्य ही बना रहता है। इसलिए सभी जानकारियां अज्ञेय में जाकर खो जाती है। उसमें एक अनुभूति है, साक्षात्कार है, जीना है परन्तु अभिव्यक्ति नही है यदि है तो पूरी नही है वह केवल एकमात्र संकेत है। और संकेत उसके स्वरूप की अभिव्याक्त नहीं है। उसकी अभिव्यक्ति को **(एकं सत विप्रा बहुधा वदन्ति)** कहकर कहा है क्योकि सब जानकारियां सापेक्ष हैं। सभी आध्यात्मिक शास्त्र उसे अवर्णनीय अनिर्वचनीय कहकर इति श्री कर लेते हैं। और वह स्वयं अज्ञेय ही बना रहता है। उस अज्ञेय को ही मानव बुद्धि रहस्य कहकर सम्बोधित करती है।

– राजहंस मैत्रेय

जीवन की पूर्णता के लिए ढीला करना पड़ता है अपने अहम का खूंट

आचार्य प्रद्युम्नजी महाराज

जीवन का अर्थ है-खाना, पीना, सोना, उठना, जागना, कृषि-व्यापार, आदि करना, पढ़ना-लिखना, खेलना, कूदना, बातें करना, युद्ध करना, संग्रह करना, त्याग करना, सोचना, विचारना, उपदेशादि करना, शास्त्रों को समझना, इन्द्रिय भोगों को भोगना, सन्तान का पालन-पोषण करना, घर-परिवार, समाज, राष्ट्र या वैश्व संस्था का संचालन करना, दान देना, दान लेना, अच्छा-बुरा अनुभव करना, मन को शान्त करना, ध्यान करना, साधना करना, निःस्वार्थ भाव से सेवा करना, लूटना, चोरी करा, छल-कपट करना, धोखा देना, विश्वासघात करना, सहयोग लेना, उदासीन रहना, एक शब्द में, मनुष्य जो कुछ भी जीवित रहता हुका कर रहा है-उत्कृट या निकृष्ट, प्रवृत्ति या निवृत्ति, धर्म या अधर्म, पुण्य या पाप, साधु या असाधु, भोग या त्याग सभी कुछ जीवन का रूप है।

इसमें इतना विशेष रूप से समझाना चाहिए कि जीवन के कुछ क्रिया कलाप ऐसे होते हैं, जिनके द्वारा स्वयं तथा दूसरों को भी सुख मिलता है और कुछ के द्वारा केवल दुःख मिलता है, कुछ मनोभाव ऐसे होते हैं जिनसे व्यक्ति अपने आप को भारी, बोझिल, तनाव-युक्त अनुभव करने लगता है और किन्हीं के द्वारा हल्का। इसी प्रकार मन की ऐसी अवस्था भी आती है कि व्यक्ति अपने को अत्यन्त फँसा हुआ, पराधीन व चारों ओर से भय के द्वारा घिरा हुआ पाता है, तो दूसरे समय एकदम मुक्त, स्वतन्त्र व अभय की स्थिति का अनुभव करता है। विद्वानों ने इन दोनों स्थितियों को शुभ-अशुभ अथवा सत्य-असत्य के रूप में विभाजन किया है।

व्यक्ति के मन की चाल या तो बाहर की तरफ होती है या भीतर की तरफ। व्यक्ति जब बाहर देखता है तो उसके 'मैं' का तादात्य बाह्य वस्तु, व्यक्ति या विचार के साथ हो जाता है और उसे ही वह अपना स्वरूप समझने लगता है। ऐसे में जो वस्तु, व्यक्ति, विचार सुखदायी प्रतीत होते हैं-उन्हें 'अपना', 'मेरा', 'हमारा' नाम दे दिया जाता है तथा जिनसे दुःख मिलता है या सुख नहीं मिल रहा होता, उन्हें 'पराया' 'दूसरा', 'तुम्हारा'। यह हम सबका ही प्रतिदिन का अनुभव है। व्यक्ति कभी 'मेरा मन' तो कभी 'मन को ही अपना स्वरूप' समझता है। कभी हम शरीर को 'मैं' कहते हैं तो कभी 'मेरा शरीर'।

कभी उनके वियोग या विनाश में कहते-सुनते देखा जाता है कि मैं तो मर ही गया और उनकी वृद्धि से अपनी वृद्धि आँकते हैं। कभी 'प्रतिष्ठा' मेरी होती है और कभी मैं प्रतिष्ठा रूप होता हूँ। अप्रतिष्ठा होने से अपनी मौत और प्रतिष्ठा वृद्धि से अपनी वृद्धि का सिलसिला चालू रहता है। इसी प्रकार किसी विचार को व्यक्ति अपना कहकर पुकारता है और जब उस विचार पर कोई चोट पहुँचाता है, तो विचार के साथ एकीभूत हुआ वह व्यक्ति उस चोट को अपने पर ही पड़ती हुई समझता हे। उसकी प्रशंसा या समर्थन से अपने को ही प्रशंसित या समर्थित हुआ मानता है। मेरा सिद्धान्त, मेरा घर, मेरा समाज, मेरा भाई इत्यादि में भी यही होता है। कहीं विदेश में अपने देश का कोई व्यक्ति मिलने पर 'मेरे देश का', 'मेरा मित्र', 'मेरा सम्बन्धी' इत्यादि विविध क्षेत्रों में 'मेरा' शब्द का व्यवहार होता रहता है।

जैसा कि देखा गया, जो मेरा होता है-वह निश्चित रूप से 'मैं' का ही एक भाग होता है या दूसरों शब्दों में जिस अवधि तक व्यक्ति का 'मैं' फैल जाता है वहाँ तक 'मेरा' इसकी सीमा का अवधारण होता है। संक्षेप में मन, बुद्धि, विद्या, बल, प्राण, शरीर, पुस्तक, रूपये, पैसे, भूमिखण्ड, कार, कोठी, बँगला या झोंपड़ी, घर, परिवार, आश्रम, पुत्र, पौत्र, शिष्य, प्रशिष्य, माता-पिता, गुरु, सम्बन्धी, जाति, समाज, प्रान्त, देश, मित्रदेश, विश्व, ये सब ही विवक्षाभेद से कभी 'मैं' होते हैं तो कभी मेरे। इस 'मैं' और 'मेरे' का खेल, मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी अपने-अपने स्तर पर खेल रहे हैं। इस प्रकार जीवन की यह नौका को खोलना होता है, क्योंकि बहिर्मुखी जीवन का अर्थ है संसार तथा अन्तर्मुखी जीवन का उद्‌देश्य है भगवान्।

इस प्रकार देखा गया कि व्यक्ति जिस किसी को अपना आपा (मैं या मेरा) मान लेता है, निकटतम मन-बुद्ध

या विद्या, बल, शरीर से लेकर दूरतम देश जाति तक तो अपने ज्ञान व समझ के अनुसार उस माने हुए मैं या मेरे की सुख-अभिवृद्धि व उन्नति के लिए भरसक प्रयास करता है। उस अपने अंगीकृत 'मैं' के विकास में जो वस्तु, व्यक्ति व विचार बाधक प्रतीत होते हैं, उनको दूर हटाता हुआ, उन्हें नष्ट करता हुआ या फिर वे अधिक बलवान् हों तो उनसे बचता हुआ जीवन जीता है।

यदि ज्ञान-शक्ति (विवेक) का विकास कम है तो उचित-अनुचित का ध्यान न रखते हुए जिस किसी उपाय से भी (Good or bad means) अपने उस स्वीकृत 'मैं' को बढ़ाना ही जीवन का प्रमुख उद्देश्य होता है, पर यदि ज्ञान-शक्ति (विशेष समझ) का विकास हो गया है, सत्संग के द्वारा या स्वयं के अनुभव से या शास्त्र वचनों से, चाहे जिस उपाय से, तो अपने 'मैं' को बढ़ाने के लिए या अपने 'मैं' को सुखी करने के लिए और अपने उस 'मैं' के दु:खों को कम करने के लिए दूसरों की बलि नहीं चढ़ाता। उसकी बढ़ी हुई संवेदन शीलता उसको सोचने के लिए बाध्य कर देती है कि प्रत्येक का ही अपना अपना 'मैं' है, सो मुझे किसी के 'मैं' को चोट (Hurt) नहीं पहुँचानी चाहिए। ज्ञान-शक्ति के विकास के तारतम्य के अनुसार ही व्यक्ति में इस संवेदनशीलता का विकास होता है।

किसी राष्ट्रवादी देशभक्त का मुख्य 'मैं' देश-जाति इत्यादि होता है। इसलिए उसके लिए आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण, जो कि प्राय: सामान्य स्थिति में 'मैं' के मुख्यतम भाग माने जाते हैं, उन्हें भी भेंट चढ़ाने में अत्यन्त आनन्द का अनुभव होता है। जिस महापुरुष ने सम्पूर्ण समष्टि को ही अपने 'मैं' के द्वारा घेर लिया है, जीवमात्र को जो अपना कहकर पुकारता है, इतना ही नहीं बल्कि उन्हें प्रथम स्थान पर देखता है, वह उनकी सेवा में अपने समझे जाने वाले समय व शक्ति को सहर्ष अर्पित करता रहता है।

पूर्ण आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए महाराज कहते हैं कि या तो इस 'मैं' को इतना बढ़ाना चाहिए कि सब कुछ 'मैं' बन जाए। या तो 'मैं' को इतना हटाओ कि किसी भी दूसरी संज्ञा का 'मैं' के रूप में आभास ही न हो या 'मैं' को इतना फैलाओ की सर्वभूत-सृष्टि अपना आप (मैं) ही लगने लगे। दोनों ही अवस्थाओं में जीवन-नौका 'अहम्' के खूँटे से खुल जाती है। जो अनन्त की उस महायात्रा के लिए प्रस्थान करना चाह रहे हैं, उनके मन की उपर्युक्त भाव-दशा होनी चाहिए। जो केवल नैतिक जीवन जीना चाहते हैं, उनसे केवल इतनी ही माँग की जाती है कि उन्होंने जो भी अपने 'मैं' का स्वरूप गढ़ा है, अपना मन, बुद्धि, प्राण, स्त्री, पुत्र, परिवार इत्यादि जो कुछ है वे अपने 'मैं' को सुख देने के चक्कर में दूसरे के 'मैं' को कष्ट न दें। एक परिवार में भी पति अपने 'मैं' के लिए पिता के 'मैं' को पीड़ा न दे। जितना बन सके अपने 'मैं' से दूसरे के 'मैं' का सहयोग करें। अपने 'मैं' की प्रसन्नता के लिए दूसरे के 'मैं' की अपेक्षा रखें, उपेक्षा न करें। इस प्रकार करते-करते काल क्रम में 'मैं' का यह बन्धन ढीला पड़ जायेगा। यदि इस नैतिक दृष्टि का भी आलम्बन नहीं लिया जाता, तो व्यक्ति जो भी करेगा, 'अहम्' की ग्रन्थि दृढ़ से दृढ़तर होती जायेगी और उसकी जीवन-यात्रा का वही हाल होता है, जैसे कोई भाँग के नशे में सायंकाल नौका में बैठकर मथुरा से वृन्दावन के लिए प्रस्थान करे, पर खूँटे से बंधे हुए नौका के लंगर को खोले ही नहीं। रात-भर चप्पू चलाता रहे। प्रात: काल जब देखते हैं तो नौका वहीं खड़ी है। एक इंच भी यात्रा तय नहीं हुई।

श्री महाराज इसे कदम ताल (Stadning Running) कहा करते हैं कि यों तो व्यक्ति देखने में पसीना-पसीना हो जाते हैं, पर खड़े वहीं के वहीं रहते हैं। यही मनुष्य के जीवन का भी हाल है। अध्यात्म के नाम पर व्यक्ति सत्संग, भजन, कीर्त्तन, रामायणपाठ, यज्ञ, हवन, तीर्थाटन, गुरुधारण, मौन, उपवास, दान दक्षिणा आदि बड़े-बड़े पुरुषार्थ करता है, पर यात्रा एक इंच भी तय नहीं होती।

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

जहाँ कल खड़ा था वहीं आज खड़ा है। कल जितना क्रोध, जितना लोभ, जितना मोह, जितना इन्द्रिय असंयम, जितना असत्य, जितना मद, जितनी ईर्ष्या, जितना द्वेष, जितनी आसक्ति, जितना आलस्य-प्रमाद, जितनी मन की अशुचिता, राग-द्वेष थे, उतने ही आज भी हैं और आने वाले कल में भी कुछ सुधार की आशा नहीं दिखाई पड़ रही। इस सबका एक ही कारण है-जिस 'अहम्' के खूँटे से अपनी जीवन-नौका को मनुष्य ने बाँधा हुआ है, उसको खोलने का या कुछ ढीला करने के लिए कुछ भी उपक्रम नहीं किया।

क्या आपने उन तथाकथित भक्तों को इस भाषा का प्रयोग करते हुए नहीं देखा कि 'मैं' इतनी लम्बी सन्ध्या करता हूँ, दैनिक अग्निहोत्र करते हुए मुझे इतने वर्ष हो गये, मेरे गुरु इतने बड़े सिद्ध पुरुष हैं, मैंने इतना सत्संग किया है, इतनी बार मैंने पारायण यज्ञ किया है, इतनी दान-दक्षिणा दी है, इतने-इतने दिन तक मैंने मौन साधना व एकान्तवास किया है इत्यादि। इन स्थूल साधनों के अनुष्ठान से वे अपने आपको दूसरों की तुलना में कितना विशेष अनुभव करने लग जाते हैं। वस्तुतः साधना का लक्ष्य तो यह होना चाहिए कि निर्विशेष पूर्णता उपलब्ध हो जाए। नाम रूप की उठती हुई लहरों के पीछे 'समं ब्रह्म' के दर्शन से चित्त पूर्ण शान्त हो जाए। हीन भाव और अभिमान दोनों से ऊपर उठकर चित्त 'समता' में प्रतिष्ठित हो जाए। कामनायें और तृष्णायें विलय को प्राप्त होकर सहज सन्तोष में स्थिर हो जाएँ।

महाराज ने निरहंकार स्थिति का स्वरूप दर्शाते हुए एक बार इंग्लिश कवि वर्ड्सवर्थ की घटना सुनायी। वर्ड्सवर्थ कहता है-पहाड़ की उस सुदूर उपत्यका में पहुँचना। वहाँ तुम्हें बहुत सारे पत्थर पड़े हुए मिलेंगे। उनमें से किसी एक पत्थर को उठाना, वही बहुतों में कोई एक मेरी मृत्यु के बाद प्रतीक रूप में मेरा स्मारक होगा। अर्थात् ये जो अनन्त आत्मायें हमारे समक्ष हैं, वे सब आत्मायें एक ही हैं- न कोई किसी से हीन है और न कोई विशेष। जो कुछ भेद है वह प्रकृति व उससे बने मन, बुद्धि व शरीर की संरचना में ही है या फिर संस्कारों में कहा जा सकता है। महाराज का कहना है-आज जिसके मन-बुद्धि व संस्कारों की विशेषता दिखाई दे रही है, वह सदा से वैसी नहीं है, कभी वे भी निश्चित रूप से इसी स्थिति में थे, जिसको आज हीन समझा जा रहा है। आज जो कछुए के रूप में है वही किसी समय खरगोश रहा होगा तथा आज का खरगोश परिस्थितिवश कभी कछुए के रूप में बदल सकता है। इन परिवर्तनमान अवस्थाओं का सामने से गुजरता हआ क्षणिक रूप पकड़कर विशेष या अविशेष कह देना ठीक नहीं है।

वास्तव में सतत परिवर्तन ही इस जगत् और जीवन का स्वभाव है। यदि वैसा है तो हम किस रूप को पकड़कर 'अच्छा' या 'बुरा' विशेषण दे रहे हैं? जबकि सबसे प्रथम व आवश्यक काम यही करना है कि जो-जो हमने 'अहम्' के खूँटे गाड़े हुए हैं, मैं विद्वान, मैं मूर्ख, मैं अधर्मात्मा, मैं पापी, मैं महान, मैं श्रुद्र उन सब खूँटों से अपनी नौकाओं को खोल देने में ही भलाई है।

अपने-अपने द्वारा निर्मित इन खूँटों के खुलते ही जीवन अनन्त से जुड. जायेगा। ये 'अहम्' के खूँटे ही मनुष्य को मर्त्य या सीमित या अल्पभाव से युक्त कर देते हैं। अल्प में कभी भी सुख नही होता, भूमा में ही सुख है। भूमा पूर्ण है, शान्त है, रस स्वरूप है, क्षोभरहित है, जबकि अल्प में संघर्ष है, क्षीयमाणता है। इसमें पुनः पुनः वृद्धि के लिए सतत प्रयास करना होता है, स्पर्द्धा है, भय है, विक्षोभ है। अतः क्यों न हम पूर्णता की ओर बढ़ें। **-योग सन्देश से साभार**

आश्रम द्वारा प्रकाशित
महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष :** 09416054195

वेद पारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का औचित्य और प्रासंगिकता

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्य जगत की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समय-समय पर ज्ञात होता है कि अमुक-अमुक स्थान पर बहुकुण्डीय यज्ञ हो रहा है व कहीं किसी एक वेद और कहीं चतुर्वेद पारायण यज्ञ हो रहें हैं। यदा-कदा यह सुनने को भी मिलता है कि किसी स्थान पर एक विशाल यज्ञ हो रहा है जिसमें लाखों व करोड़ों आहुतियां दी जायेंगी तथा कई महीनों चलने वाले उस यज्ञ में मनों व टनों शुद्ध गोधृत व विशेष रूप से तैयार की गई हवन सामग्री से हवन किया जायेगा। हम इन यज्ञों को करने वाले याज्ञिक बन्धुओं की भावनाओं का हृदय से आदर करते हैं परन्तु प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या यह सब यज्ञ वेदसम्मत, महर्षि दयानन्द सम्मत, प्रासंगिक, समयानुकूल व उचित हैं? यह तथ्य है कि यज्ञों में विकार आने के कारण ही महाभारत के बाद मध्यकाल में वैदिक धर्म का पतन हुआ था। आजकल किये जाने वाले इन वेदपारायण व अन्य वृहत्त यज्ञों का भी आगामी दशाब्दियों व शताब्दियों बाद यही रूप रहेगा या और अधिक श्रृगांर को प्राप्त होकर इनमें भी मध्यकालीन यज्ञों की भांति विकृतियां आयेंगी और यह यज्ञ सामान्य लोगों से दूर हो जायेगें। एक प्रश्न यह भी है कि क्या महाभारत काल व उससे पूर्व इस प्रकार के यज्ञ होते थे अथवा नहीं? आईये, इस पर निष्पक्ष विचार करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने अनेक ग्रन्थ लिखें है। पूना में दिये उनके 15 प्रवचनों का संग्रह भी उपलब्ध है। उनके जीवन चरित्र से भी उनके जीवन की घटनाओं व विचारों का पता चलता है। हमने प्रायः उनके सभी ग्रन्थों को देखा व पढ़ा है। वैदिक साहित्य में परिगणित अन्य अनेक ग्रन्थों को पढ़ा है जिनमें यज्ञ विषयक ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं। हमें कहीं ऐसा उल्लेख नहीं मिला कि महाभारतकाल व उसके बाद आर्य समाज की स्थापना तक वेद पारायण यज्ञ भारत में कहीं होते थे। बहुकुण्डीय यज्ञ का प्राचीन विधान भी कहीं देखने, सुनने व पढ़ने को नहीं मिला। गायत्री मन्त्र या अन्य किन्हीं मन्त्रों से सहस्र, सहस्राधिक या लक्ष आहुतियां देने वाले यज्ञों का वर्णन भी नहीं मिला। वेदों के किसी मन्त्र से भी ऐसा आभाष नहीं होता। अतः प्रतीत होता है कि इस प्रकार के यज्ञ आर्य याज्ञिकों की अपनी सोच व ऊहा का परिणाम हैं। इनसे जो लाभ होते हैं वह तो विचार कर जाने जा सकते हैं परन्तु हानि यह हो रही लगती है कि वेदों का जन-जन में जो प्रचार महर्षि दयानन्द करना व करवाना चाहते थे, जिसका विधान उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम में किया है, उस कार्य के क्रियान्वयन में कुछ न कुछ बाधा उपस्थित हो रही है। जिन लोगों को जन-जन में प्रचार करना था वह वृहत यज्ञों की योजनायें बनाने, उनके क्रियान्वयन व उसमें होने वाले व्यय हेतु धन व अन्य साधनों के संग्रह में ही अपना पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं। इससे जो समय बचेगा, उसी में तो वेद प्रचार होगा। हमें लगता है कि इस प्रकर के वृहत यज्ञों के कारण भी आर्य नेताओं, विद्वानों, याज्ञिकों व कार्यकत्ताओं का ध्यान वेद प्रचार से हट कर वृहत वेद पारायण आदि यज्ञों में लगा हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि यज्ञ न करने वाले धर्म प्रचारकों की संख्या आशातीत बढ़ती जा रही है तथा हमारी संख्या सीमित या घट रही है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज को पंचमहायज्ञ विधि और संस्कार विधि, यह दो ग्रन्थ कर्मकाण्ड के दिये हैं। पंचमहायज्ञ विधि में दैनिक यज्ञ-अग्निहोत्र की विधि दी गई है। यज्ञ से लाभ व न करने पर होने वाली हानि के विषय में भी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, पूना प्रवचन आदि ग्रन्थों में प्रकाश डाला है। दैनिक यज्ञों के अतिरिक्त संस्कार विधि में सोलह संस्कारों सहित विशेष यज्ञों का प्राविधान किया है जिसमें अमावस्या व पूर्णिमा पर किये जाने वाले पक्षेष्टि यज्ञ भी सम्मिलित हैं। यज्ञों पर इतना अधिक लिखने पर भी उन्होंने कहीं यह संकेत नहीं किया कि यदि कोई विद्वान वा यज्ञप्रेमी वृहत यज्ञ करना चाहे तो वह वेद पारायण यज्ञ करे व करवाये अथवा बहुकुण्डीय यज्ञ आदि करे व करवाये। महर्षि दयानन्द का ध्यान इस बात पर केन्द्रित दिखाई देता है कि यज्ञ में स्वच्छता हो, सरलता हो, जटिलता समाप्त हो, किसी भी प्रकार की हिंसा न हो, वातावरण पूर्ण धार्मिक हो, यज्ञ अल्प समय, अल्प साधनों व

व्यय कर सम्पन्न हो सकें, निर्धन भी प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ कर धर्म लाभ प्राप्त कर सकें जिससे अधिक से अधिक यज्ञ होने से देश व प्रजा का उपकार व हित हो। हमारा अनुमान है कि यज्ञों का प्रावधान घर्मसूत्रों, गृह्यसूत्रों तथा श्रौतसूत्रों में मिलता हैं। उनमें भी आर्य जगत में प्रचलित आजकल किये जाने वाले वृहत् यज्ञों की भांति महायज्ञों के करने-कराने का विधान नहीं है। अतः इस विषय पर सभी आर्य विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों एवं याज्ञिकों द्वारा विचार किया जाना समीचीन है।

वेदों व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति है। हमारे सभी कार्य, उपासना एवं अन्य कर्मकाण्ड इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाये गए हैं। प्राचीन काल से यह यज्ञादि कर्मकाण्ड किए जाते आ रहें हैं एवं वर्तमान समय में भी इन्हें करना चाहिये। जीवन का उद्देश्य धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्त होने व इसकी प्राप्ति होने पर उद्देश्य पूरा हो जाता है। दर्शनकार कहते हैं कि मनुष्य को उपासना कर ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहिये। ईश्वर साक्षात्कार से मनुष्य जीवन-मुक्त हो जाता है जिसका परिणाम इसी जन्म या आगामी एक या कुछ जन्मों के बाद भोगतव्य कर्मों को भोगने के बाद मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। अशुभ कर्म तो सभी को भोगने ही होंगे। इन भोगों के समाप्त व शेष न रहने पर ही उपासना द्वारा ईश्वर-साक्षात्कार होने पर मुक्ति वा मोक्ष प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर साक्षात्कार के साधन ''सन्ध्या'' के उपस्थान मन्त्रों में यह भी लिख दिया कि है कि **'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपया नेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः'** अर्थात् 'हे दया के भण्डार परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे अनेकानेक जप-उपासना आदि कर्मों के आधार पर हमें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की आज ही सिद्धि व प्राप्ति कराईये।' यज्ञ में वह स्विष्कृदाहुति तथा पूर्णाहुति का प्रावधान करते हैं। इनमें ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की बात नहीं कही गई है। यदि प्राजापत्याहुति की [illegible] बात करें जिसे मौन होकर दी जाती है तो वहां भी यह कहा जाता है कि कि प्रजा के स्वामी ईश्वर की प्रसन्नता के लिए यह आहुति देते हैं। यह शुद्ध गोघृत की हमारी आहुति प्रजापति ईश्वर के लिए है, इदन्न ममू, यह मेरी नहीं है। यह निष्काम व समर्पित भाव से दी जाने वाली आहुति है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि यज्ञ करने से ईश्वर साक्षात्कार नहीं होता, हां यज्ञ ईश्वर साक्षात्कार के पूरक हैं। सन्ध्या-उपासना की सफलता ही ईश्वर का साक्षात्कार कराती है और यही ईश्वर की प्राप्ति की उच्चतम व शिखर अवस्था है। यह प्राप्त होने पर तो जीवन-मुक्ति का लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। अब अन्य किसी फल की तो अपेक्षा ही नहीं है। यज्ञ पर आगे विचार करें तो यज्ञ से आध्यात्मिक व भौतिक लाभ होते हैं जिसमें पर्यावरण की शुद्धता, आरोग्य, आयु की वृद्धि आदि लाभ होते हैं। यज्ञ के इन लाभों व उपासना के लाभ ईश्वर साक्षात्कार एवं धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति सर्वोत्तम व सर्वाधिक लाभ है। अतः इस ओर भी हमारे यज्ञ प्रेमियों को ध्यान देना चाहिये। इन दोनों कर्मों को करके जिससे जितना लाभ होता है, उतना ही करना उचित है। ऐसा नहीं होना चाहिये कि कम लाभ होने वाले कर्म को अधिक करें और अधिक लाभ देने वाले कर्म को कम महत्व दें।

यहां यह भी विचारणीय है कि दैनिक अग्निहोत्र के अन्तर्गत किया जाने वाला यज्ञ यजमान को इहलौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के लाभ पहुंचाता है। शुद्ध भावना से कोई भक्त हृदय वा यज्ञ प्रेमी यदि वृहत् यज्ञ करता है तो इससे किसी प्रकार की हानि होती प्रतीत नहीं होती जैसी कि मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, जन्मना जाति व्यवस्था आदि कार्यों से होती है। अतः वृहत् यज्ञ भी किया जा सकता है परन्तु देखने वाली बात यह है कि इससे वेद प्रचार के वांछित साधनों एवं इस कार्य में जितने समय व पुरूषार्थ की आवश्यकता है उसमें किसी प्रकार की कमी न आये। आज तो वृहत् यज्ञ में विकृतियां कुछ कम हैं परन्तु कालान्तर में क्या होगा इस पर कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इतिहास अपने आप को दोहराता है, यह कहावत है। अतः यज्ञों को अधिक से अधिक सरल व अल्प व्यय व समय साध्य बनाना व रखा जाना जनहित में है। अतः जहां तक हो सके दैनिक व विशेष यज्ञों तक ही सीमित रहा जाये तो अत्युत्तम है जिससे आज समयाभाव के युग में लोग यज्ञ कर सकें। हमारा यह भी मत है कि यज्ञ प्रेमी उपासना में अधिक ध्यान

देकर स्वयं यह निर्धारित करें कि क्या महर्षि दयानन्द प्रोक्त दैनिक व विशेष यज्ञों में कहीं कोई कमी रह गई है? कहीं उनका वृहत यज्ञों के रूप में वेदपारायण व बहुकुण्डीय यज्ञों का सत्य महर्षि दयानन्द के प्रति अविश्वास व वैदिक कर्मकाण्ड की उदात्त भावना के विपरीत तो नहीं है? इसका निर्णय हम वेद व यज्ञ के मर्मज्ञ विद्वानों पर छोड़ते हैं। हमने वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान डा. रामनाथ वेदालंकार जी के यज्ञ मीमांसा ग्रन्थ में विवेचित वेदपारायण-यज्ञ, गायत्री यज्ञ, बहुकुण्डी यज्ञ, यज्ञ को महिमामण्डित किस सीमा तक करें? शीर्षक के अन्तर्गत विचारों को भी देखा है। हमें लगता है कि सभी यज्ञ प्रेमियों व विद्वानों को इस ग्रन्थ का अध्ययन कर अपना कर्तव्य निर्धारित करना चाहिये।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव [illegible] टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री रा[illegible]याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटे[illegible]न्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री [illegible] प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

–राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

दूसरी ओर मेघनाद का वध सुनकर रावण विलाप करने लगा। हा-राक्षस महारथे, मेरे प्रिय वत्स, तु समर में इन्द्र से भी ना जीता जाने पर भी कैसे उस लक्ष्मण के हाथों से परलोक सिधार गया? हे वीर! अगर मैं यमलोक चला जाता तो तुम मेरा अन्तयेष्टि संस्कार करते, लेकिन यह तो विपरीत हो गया। पुत्र वध से संतप्त हुआ वह लाल नेत्रों वाला राक्षसों को देखकर बोला-''मेरे पुत्र ने तो मायावी सीता को मारा था, लेकिन मैं इसे सत्य करके दिखाऊँगा।'' इस प्रकार मन्त्रियों से कह हाथ में तलवार लेकर बड़े वेग से वहाँ आया, जहाँ सीता को रखा हुआ था। रावण को इस अवस्था में देखकर, सीता डर से थर-थर कांपने लगी। लेकिन इसी अवसर पर रावण का एक शीलवान, शुचि तथा बुद्धिमान मन्त्री सुपार्श्व मध्य में आकर रावण से बोला-''हे राजन्! आप कुबेर के साक्षात भाई होने के कारण कैसे धर्म को छोड़कर सीता का हनन करना चाहते हैं। हे वीर राक्षेश्वर! वेद-विद्या, ब्रह्मचर्य व्रत में स्नातक होते हुए कैसे स्त्री वध को उचित मानते हैं। हे राजन्! इस रूप सम्पन्न सीता की तो आप रक्षा करें और युद्ध में जाकर उस राघव को समाप्त करो। आज कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी है। सो आज ही तैयार करके कल अमावस्या को सेना सहित विजय के लिए चढ़ाई करें। आप शूरवीर हैं, शस्त्र विद्या के जानने वाले है, इसीलिए रण में राम को मारकर सीता को प्राप्त करें।'' सुपार्श्व के कथन किए हुए धर्मयुक्त वचन स्वीकार करने के पश्चात वह राजसभा में आया। परम दु:खी और क्रोध में भरा हुआ रावण आसन पर बैठकर लम्बे-लम्बे साँस लेने लगा और सब सेनापतियों को बोला कि-''सम्पूर्ण हाथी घोड़े और रथ समूहों से युक्त होकर इस प्रकार युद्ध में चढ़ाई करों जिस प्रकार से वर्षा काल में बादल चढ़ते हैं। मैं कल इस सारी दुनिया के देखते-देखते राम का हनन करूंगा'' रा[illegible] की आज्ञा पाकर महापार्श्व, महोदर तथा [illegible]पाक्ष अपने-अपने रथों पर सवार हुए और वि[illegible]की कामना से युद्ध के लिए चल पड़े। रावण भी बड़े वेग वाले घोड़ों से युक्त होकर उसी द्वार से निकला जिधर राम और लक्ष्मण थे। दोनों तरफ से घोर युद्ध होना शुरु हो गया। वानर सेना को भगाकर रावण उधर गया जहां राम खड़ा था।

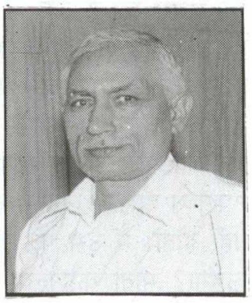

दोनों में भयंकर युद्ध होना शुरु हो गया। दोनों महावीरों के द्वारा गये बाणों से आकाश ढक सा गया। जहां रावण के साथ कई योद्धा युद्ध कर रहे थे, वहां राम के साथ लक्ष्मण व विभीषण आदि योद्धा युद्ध कर रहे थे। लक्ष्मण ने सात बाणों द्वारा रावण के ध्वज को काटकर सारथी को मार डाला। विभीषण ने भी गदा द्वारा रावण के घोड़ों को मार गिराया जिससे रावण बड़ा कुपित हुआ और उसने एक बड़ी शक्ति विभीषण को लक्ष्य करते हुए फेंकी, जिसे लक्ष्मण ने अपने तीन तीव्र बाणों से काट दिया। रावण ने बिना कोई देर किए वही शक्ति लक्ष्मण पर बड़े वेग से फेंकी। लक्ष्मण अभी संभल नहीं पाया था कि वह शक्ति उसके हृदय में जा धंसी, जिससे वह वीर तुरन्त ही भूमि पर गिर पड़ा। तब क्रुद्ध हुए बलवान राम ने उस शक्ति को हाथों से खींच लिया और उसके टुकड़े कर दिये। इसी अवसर पर रावण ने बड़े ही मर्म भेदी बाण राम पर छोड़े लेकिन राम ने उन बाणों की कोई परवाह नहीं करते हुए हनुमान और सुग्रीव को लक्ष्मण की रक्षा करने को कहा और साथ में यह भी कहा कि मैं वह काम करूंगा जिसे जब तक पृथ्वी रहेगी चराचर और देवताओं सहित सब लोग कथन किया करेंगे। यह कहकर सावधान हुए राम ने तीक्ष्ण प्रहार किए और क्रुद्ध हुए रावण ने भी प्रबल बाणों की वर्षा की। एक दूसरे के दांव को काटते हुए उत्तम बाणों की तुमुल ध्वनियाँ हुई। अन्तत: चमकते हुए धनुष वाले महात्मा राम के बाणों से पीड़ित हुआ रावण भयभीत हुआ भाग निकला। रावण के भाग जाने

पर राम शीघ्र ही लक्ष्मण के पास आये और बड़े दु:खी हुए सुषैन से बोले-''यह वीर लक्ष्मण, रावण के बल से भूमि पर गिरा हुआ मेरे शोक को बढ़ा रहा है। मेरा मन घबरा रहा है और मैं युद्ध करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। यदि यह शुभ गुणों वाला मेरा भाई मृत्यु को प्राप्त हो गया तो मुझे जीवन धारण करने से क्या? जैसे यह वीर वन चलते समय मेरे साथ आया था, मैं भी यम के घर जाते हुए इसके साथ जाऊँगा। देश में सब कुछ उपलब्ध होता है लेकिन सहोदर भाई का उपलब्ध होना नहीं होता। मैं उस पुत्र वत्सल सुमित्रा से जाकर क्या कहूंगा? माता कौशल्या व कैकेयी से क्या कहूंगा? भरत और शत्रुघ्न से जाकर क्या कहूंगा? अत: मेरे लिए मरना ही अच्छा है। श्रेष्ठ बन्धुओं से निदा कराना अच्छा नहीं होता है।

हा-भ्राता तु मुझे अकेला छोड़कर कैसे परलोक को जाता है? तू मुझसे बातें क्यों नहीं करता है?'' इस तरह से राम को विलाप करता हुआ देखकर उस समय के प्रसिद्ध वैद्य सुषैन ने राम को आश्वासन देते हुए यह उत्तम वाक्य कहे कि ''हे नरशार्दुल इस शोक में डूबी हुई बुद्धि को त्यागो। लक्ष्मी को बढ़ाने वाले लक्ष्मण ने प्राणों को नहीं त्यागा है। इसकी कान्ति वाला प्रसन्न मुख आप देखें। आप विशाद को प्राप्त न होवें, सभी लक्षणों से लक्ष्मण जीवित हैं। इसका हृदय बार-बार कांप रहा है। इसके अंग अभी अकड़े नहीं है।'' इसके पश्चात सुषैन अपने समीप खड़े हुए हनुमान से बोला-''हे सौम्य! तुम यहां से शीघ्र ही महोदर पर्वत पर जाओ और उसके दक्षिण में शिखर पर उत्पन्न हुई विशल्यकरणी (घाव को भरने वाली) सौवर्ण्यकरणी (पहले जैसा रूप रंग करने वाली) संजीवकरणी (जीवन को वापस लाने वाली) और संधानी (टूटी हड्डियों को जोड़ने वाली) इन चारों औषधियों को तुरन्त ही लाओ।

टिप्पणी: जब क्रोधित हो रावण ने सीता को ही मारने का निश्चय किया तो उस अवसर पर विद्यमान सुपार्श्व नामक रावण के मन्त्री ने यह अपराध करने से रावण को समझाया, प्रमाण देखिए-

सुपाश्रों नाम मेधावी रावणं राक्षसां वरम्।
निवार्यमाणः सचिवैरिंद बचनमब्रवीत।।

श्लोक 21 यु.का

अर्थात् इसी अवसर पर उसका शीलवान और बुद्धिमान मन्त्री अन्य मन्त्रियों से रोका हुआ रावण से बोला:-

वेद विद्याव्रतस्नातः स्वकर्मनिरतस्तदा।
स्त्रियः कस्माद्वधं वीर मन्यसे राक्षसेश्रवरः।।

श्लोक 23 यु. का.

अर्थात् हे राक्षसेश्वर्, आप वेद विद्या में स्नातक होते हुए कैसे स्त्री वध जैसे कर्म को उचित मानते हैं? सुपार्श्व के समझाने से रावण मान गया और राज सभा में जाकर राम और लक्ष्मण के वध के लिए तैयारी करने लगा। यहाँ एक बात तो अवश्य प्रमाणित है कि उस समय पठन-पाठन के लिए आर्ष प्रणाली विद्यमान थी। जहाँ स्नातक या इससे आगे पढ़ने-पढ़ाने का प्रचलन था और यही प्रणाली महाभारत काल तक प्रचलित रही। रावण के पतन का मूल कारण उसका अहंकार व ईर्ष्या द्वेष का दोष था। अगले दिन रावण अपनी पूरी तैयार से युद्ध में गया। उसने सबसे पहले विभीषण को मारना चाहा, लेकिन लक्ष्मण ने आगे आकर विभीषण की रक्षा की। लक्ष्मण तो विभीषण के बचाव के उद्देश्य से उपस्थित रहा। वहीं अच्छा अवसर जानकर एक तीव्र शक्ति रावण ने लक्ष्मण पर छोड़ दी जिससे लक्ष्मण मृत्यु के निकट पहुंच गया। राम द्वारा प्रहार करने पर रावण को भागना पड़ा, इसके उपरान्त लक्ष्मण की दशा देखकर जो राम ने वचन कहे, उनको पढ़कर और जानकर किसी भी व्यक्ति के मन में शंका नहीं रहनी चाहिए कि राम ईश्वर के अवतार थे। इसमें प्रमाण देखिए:-

किं मया दुष्कर्म कर्म कृतमन्यत्र जन्मनि।
येन में धार्मिकों भ्राता निहत अग्रतः स्थित।

श्लेका 14 यु. का.

अर्थात् मैंने अन्य जन्म में क्या दुष्कृत कर्म किया है जिससे मेरा धार्मिक भाई मेरे आगे मरा पड़ा है) यह श्लोक सब कुछ सिद्ध कर देता है, पहला तो यह कि श्री रामचन्द्र जी एक मनुष्य होने के नाते अपने सभी पिछले जन्मों को मान रहे हैं। उनके कहने का तात्पर्य है कि इस जन्म में तो मैंने ऐसा कोई पाप कर्म नहीं किया लेकिन यह किसी अन्य जन्म का मेरे द्वारा किया कर्म है। जो मेरा धार्मिक भाई मेरे सामने मरा

पड़ा है। इसका तात्पर्य तो यह हुआ कि अगर राम स्वयं परमात्मा थे तो क्या ईश्वर भी कभी कोई पाप कर्म करता है? और नहीं करता तो राम का मनुष्य होना सिद्ध होता है। दूसरा और भी महत्वपूर्ण है कि लक्ष्मण जिन्दा था लेकिन राम ने उसकी अवस्था को देखकर यह मान लिया था कि लक्ष्मण मृत्यु को प्राप्त हो गया है। यह तो प्रसिद्ध वैद्य सुषैन ने बताया कि लक्ष्मण ने अभी प्राणों को नहीं छोड़ा है। लक्ष्मण की अवस्था देखकर राम को अवसाद की स्थिति में चले जाना भी अपने आप में एक बहुत बड़ा उत्तर है। इस प्रसंग में हमें ऐसी चार जड़ी-बूटियों का वर्णन भी मिलता है जो कि जीवन देने वाली हैं। इससे उस समय की आयुर्वेदिक विद्या का ज्ञान होता है कि कैसे-कैसे उच्च स्तर की विद्या के जानकर वैद्य हमारे पास होते थे। वैद्य सुषैन द्वारा इन जड़ी-बूटियों को कहां से प्राप्त किया जा सकता है और इन जड़ी-बूटियों को महोदर (हिमालय) पर्वत से कौन ला सकता है, इस सारे कार्य के लिए सुषैन ने हनुमान को ही उपयुक्त समझा और यह सत्य भी है कि हनुमान के अतिरिक्त इस अति दुर्लभ व दुष्कर कार्य को कोई ओर कर भी नहीं सकता था और दूसरी ओर हम हैं कि ऐसे महान, बुद्धिमान, महावीर व सुशिक्षित, बलशाली सेनापति को बन्दर मानते-जानते एवं बताते हैं। हम प्राय: यह सुनते हैं कि जब-जब पापों की वृद्धि होती है तब-तब परमात्मा मनुष्य के रूप में अवतारित होकर उन पापों का तथा पापियों का संहार करते हैं। अगर एक पल के लिए ऐसा मान भी लिया जाए तो वर्तमान में निर्भया जैसे काण्ड हो रहे हैं और थोड़े ही दिन पहले रोहतक के पास एक गांव में मानसिक रूप से विक्षिप्त लड़की के साथ जो घिनौना कृत्य किया गया, रोज सैकड़ों हजारों हत्याएं हो रही हैं, बाप-बेटे को बेटा-बाप को मार रहा है, माँ-पुत्र को तथा पुत्र-माँ को मार रहा है तो क्या यह उचित समय नहीं है कि परमात्मा अवत[illegible] धारण करके इन पापियों का नाश कर दें? क्य[illegible]सका उत्तर अवतारवादियों के पास है? यह स[illegible]ड़बड़ कैसे हुई इसका ठीक-ठीक उतर तो [illegible] स्वामी विरजानन्द दण्डी जी अपने पत्र में जयपुर [illegible]रेश को लिख रहे हैं:- ''कि आर्ष ग्रन्थ जो ऋषियों ने लिखे हुए हैं, वे संस्कृत भाषा में होते हैं और संस्कृत भाषा का प्रमाण व्याकरण होता है।'' इसका तात्पर्य स्पष्ट है कि जिनको पूरा व्याकरण नहीं आता वह श्लोकों व मन्त्रों के अर्थ अपने मन-माने ढंग से कर बैठते हैं। जिससे आर्ष ग्रन्थ, अनार्ष ग्रन्थ बन जाता है। मूल कारण अविद्या, अन्ध विश्वास, पाखण्ड, अज्ञान और मनुष्य के पतन का यहीं से आरम्भ हो जाता है। इसी व्याकरण के सूर्य स्वामी विरजानन्द दण्डी जी ने जो विद्या ऋषि दयानन्द को प्रदान की उसी विद्या से उन्होंने सारे संसार को एक नई ज्योति प्रदान की और आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना की, जिसके सिद्धान्त और चिन्तन कहते हैं कि परमात्मा अणु-अणु और कण-कण में सर्वत्र विद्यमान और सर्वव्यापक है। वह निराकार है, शक्ति है, व्यक्ति नहीं। आर्य समाज अपने महापुरुषों को श्रद्धेय, पुण्य आत्मा, प्रेरणा स्त्रोत व आदर्श रूप में मानता है। यह मिथ्या व अज्ञानता पूर्ण कथन है कि आर्य समाज अपने महापुरुषों को नहीं मानता। जबकि सत्य यह है कि जितना महत्व महापुरुषों को आर्य समाज प्रदान करता है इतना और कोई संगठन व समाज नहीं करता। इन्हीं महापुरुषों में से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी भी एक हैं। वैसे अवतार शब्द का अर्थ होता है उपर से उतरना। यह आप ही विचार करिए श्री रामचन्द्र जी माता कौशल्या के गर्भ से आए थे या आसमान से उतरे थे?

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर– दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

वीर सावरकर पर विशेष

–हरीन्द्र श्रीवास्तव

एक जीवन में दो जन्मों के कारावास पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने कहा 'मैं, न्यायाधीश महोदय को कम से कम इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि उन्होंने एक जीवन में दो जीवनों के कारावास का दण्ड देकर हिन्दुओं के पुनर्जन्म के सिद्धांत को मान लिया है।'

इस निर्णय के बाद सावरकर ने अपना निजी वस्त्र उतार कर कैदियों वाले खुरदुरे वस्त्र धारण कर लिए। उनके गले में एक बिल्ला लटका दिया गया जिस पर क्रम संख्या 32778 के अतिरिक्त एक और अक्षर भी अंकित था, डी। जिसका अर्थ था डेंजरस यानी खतरनाक।

इसी बिल्ले पर दण्ड दिए जाने व मुक्ति का दिन, दोनों ही लिखे हुए थे। 'दण्ड ई. स. 1910 तथा मुक्ति ई.स. 1960। समस्त सुख संपत्ति से वंचित, सावरकर ने मानी सिर पर कांटो का ताज पहन लिया हो। हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़ दिया गया। काला पानी भेजने से पूर्व तक उन्हें बम्बई के कारागृहों में रखा गया। संयोग की बात कि यहां डोंगरी जेल में उन्हें उसी बैस्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जहां इससे पहले उनके गुरु व आदर्श लोकमान्य तिलक को दो बार रखा गया था। यहां मिलने आने वालों में सबसे अधिक स्मरणीय व मार्मिक भेंट थी उनकी अपनी पत्नी यमुना बाई से–'क्यो?.... ऐसे क्यों देख रही हो?. ... क्या मुझे पहचाना नहीं? अरे, मैं वही तो हूँ, तुम्हारा पति। वही मन है, वही आत्मा। केवल तन को ढकने वाला यह चोला बदल गया है। वैसे एक तरह से यह मोटे और खुरदुरे कपड़े अधिक अच्छे हैं। इन्हें पहनकर जाड़ों में ठंड नहीं लगती।'

सावरकर के यह शब्द सुनकर उनकी 19 वर्षीय पत्नी फूट-फूटकर रोने लगी। मोटी-मोटी लोहे की सलाखों के पीछे, टाट के कपड़े पहने, हथकड़ियों-बेडियों से जकड़े सावरकर की यह दशा और यह उद्गार उससे सहे नहीं गए। तब सावरकर ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा-'आंसुओं को पोंछ डालो, प्रिय! यह रोने की नहीं, गौरव करने की घड़ी है। मातृभूमि के लिए उठाए गए कष्टों पर दु:ख नहीं, गर्व होना चाहिए। चिन्ता न करो, ईश्वर ने चाहा तो फिर भेंट होगी।

इस बीच यदि यह समाज या अन्य दुर्विचार तुम्हें सताएं तो मन में यह विचार लाना कि केवल सन्तानोत्पत्ति करके परिवार का विस्तार करना अथवा चार तिनके जमा करके घर बना लेना ही जीवन कहलाता है, ऐसा तो पशु-पक्षी भी कर लेते हैं और यदि परिवार का व्यापक अर्थ 'मानव परिवार' है तो इसे सजाने में हम निश्चय ही पूर्ण सफल रहे हैं।

माना कि अपना सुखी जीवन स्वयं हमने अपने ही हाथों मिटा डाला, किन्तु इसी से भविष्य में सहस्त्रों घरों-परिवारों में सुख की वर्षा होगी। हमने अपने घरों में जो आग लगाई है, उसी की लपटों से भारत मां के भाल पर स्वतन्त्रता का उजाला होगा। तब क्या हमें अपना बलिदान सार्थक नहीं लगेगा?'

पति-पत्नी की यह भेंट बड़ी हृदय-विदारक थी। डोंगरी जेल से हटाकर उन्हें कुछ समय के लिए बम्बई की ही भायखला जेल में रखा गया। यहां से एक विशेष रेलगाड़ी द्वारा उन्हें मद्रास ले जाया गया। यहां से 27 जून को 'महाराजा' नामक जलपोत द्वारा उन्होंने अंडमान की ओर प्रस्थान किया। 'सवातन्त्र्य सम्राट' के लिए इस जलपोत का नाम भी कितना उपयुक्त था।

चार दिन, चार रात सागर के वृहद वक्षस्थल को चीरता यह जलपोत 2 जुलाई को पोर्ट ब्लेअर पहुंचा। जहाज से उतरकर अपना कम्बल-थाली संभाले यह वीर चल पड़ा उस कारागार की ओर जहां के नारकीय द्वार में एक बार प्रवेश हो जाने के बाद, वहां दी जाने वाली पैशाचिक यातनाओं को झेलकर कोई विरला ही जीवित लौट पाता था। पर हमारा नायक, वीर विनायक, जिसे 'कालजयी' और 'मृत्यञ्जय' भी कहा जाता है, 11 वर्ष तक कालापानी का कालकूट पीकर भी सही सलामत लौट आया।

> आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।
>
> –राजहंस मैत्रेय

विश्व को जरूरत है नारी के श्रद्धासिक्त अभिसिंचन की

माता ही यदि हो अज्ञान, बच्चे कैसे बनें महान

– डॉ. विजय कुमार मिश्र

नारी एक होकर भी अनेक आयामों से कार्य करती है। संबंधों में वह माता, भगिनी, पत्नी, कन्या सभी दायित्व एक ही साथ पूर्ण करती है, तो सामाजिक क्षेत्र में कर्मठता, निष्ठा, संवेदनशीलता, निष्पक्षता की प्रतिमूर्ति बनकर खड़ी होती है। वही राष्ट्रीय व वैश्विक परिप्रेक्ष्य में असीम धैर्य, नि:श्रेयस के साथ निर्माण व अभ्युदय का दायित्व निभाती है।

वह अनेक बार नैपथ्य में डाली गयी पर दिव्य सामर्थ्यबोध से पुनः पुनः विश्वास रूपी नेतृत्व का आधार बनकर खड़ी हुई। वृहत्संहिता में (**'पुरुषाणां सहस्त्र च सती नारी समुद्धरेत्'**) का वर्णन है अर्थात् सती स्त्री अपने पति का ही नहीं, अपने उत्कृष्ट आचरण की सामर्थ्य से सहस्त्रों पुरुषों का कल्याण करती है (यहां सती का आशय नारी की उत्कृष्टता से है। दूसरे शब्दों में कहें तो 'नारी को स्वस्थ, प्रसन्न, समुन्नत, शिक्षित, उत्कृष्ट, स्वावलम्बी बनाये रखने का दायित्व समाज का है। उसकी क्षमता को विकसित करने में लगाया धन, श्रम, मनोयोग एवं समय समाज एवं राष्ट्र को असंख्यों गुना होकर लौटता है। नारी जितना समर्थ बनेगी राष्ट्र की संतानें उतना ही सशक्त व समृद्ध होंगी क्योंकि वह निर्मात्री जो है।

सीमाओं से परे होती है माँ- हर राष्ट्र के नागरिक नारी शक्ति के रक्त, रस से निर्मित होते हैं। उनमें विद्यमान चेतना का अभिसिंचन, परिपोषण, संस्कारों का विकास मां रूपी नारी द्वारा ही संभव बनता है। ऐसे में यदि नारी का रक्त व रस परिपोषित होगा, तो [illegible]री पोषित होगी। तभी नारी की संतानें स्वस्थ, समुन्नत [illegible]दा होगी और राष्ट्र व विश्व प्रखर पीढ़ी से भर उ[illegible]। यदि मां ही दुर्बल होगी, तो विश्व से अनीति अत्या[illegible] मिटाने वाले सूरमा कहां से आयेंगे। ये सूर[illegible] वैज्ञानि[illegible] कलाकार, विद्वान, दार्शनिक, समाज सेवक, प्रशासक, राजनेता, मनीषी उद्योगपति, महापुरुष के रूप में हों या देश की सीमा रक्षा करने वाले वीर [illegible]पठी। वे सभी माँ की गोद में खेल-खेल कर हो[illegible]रती माँ को पुष्पित-पल्लवित करते हैं। इसीलिए नारी किसी एक व्यक्ति की जननी नहीं हुई, अपितु उसे राष्ट्र मां, विश्व माता की गरिमा देना भी कम है। वास्तव में एक-एक नारी, वह किसी भी देश की सीमा में निवास क्यों न करती हो, है वह जगदजननी ही। क्योंकि मातृत्व शक्ति के कारण वह सदा सीमाओं से परे होती है। अत: उसे उचित सम्मान मिलना ही चाहिए।

वह देवी है- नारी देवी कही गयी है, देवता उसके अनुचर। इसलिए कि वह अल्प में ही संतुष्ट होती है, जबकि अनुदान-वरदान वृहद स्तर पर लुटाती है। संसार में कबीर, सूर, तुलसी, समर्थ गुरु रामदास, संत रविदास, वंदा वैरागी, संत तुकराम, आचार्य चाणक्य, राम-कृष्ण, महर्षि रमण, महर्षि अरविन्द, सरदार भगतसिंह, असफाक उल्ला खांन, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजार, स्वामी विवेकानन्द, सुभाष, गांधी, पं. श्री राम शर्मा आचार्य, से लेकर वर्तमान राष्ट्रसंत योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज, ऋषिकल्प श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण महाराज जैसे अनेक युग दृष्टा हैं जिन्होंने देवत्व की दिव्य धाराओं को साधिकार धरा पर उतारने में समर्थ हुए। वह सभी किसी न किसी मां की कोख से ही जन्में। इन दिव्य पुत्रों में देवत्व से परिपूरित संस्कार उनकी माताओं ने ही भरे हैं। इससे स्वत: सिद्ध होता है कि जो जीवन में देवत्व जागृत करे उसे देवी नहीं तो और क्या कहें?

यही है आत्मबोध का समय: बड़े दु:ख का विषय है कि इतनी दिव्यता से ओतप्रोत नारी शक्ति के लिए 'संयुक्त राष्ट्र संघ' को 'एक दिवस' घोषित करके उसके उत्थान की सोचना पड़ा। नारी जाति की यह दुर्बलता, दयनीयता, परावलम्बी, पददलित जिन्दगी का कारण कहीं अलग नहीं हो सकते। इसी समाज, इसी विश्व की उसकी ही संतानों ने उसे उपेक्षा एवं पिछड़ेपन का न केवल शिकार बना दिया, अपितु, उसके अंत: की गहराई तब अबला होने का भाव भरकर नारी वर्ग को हीनता के स्तर तक पहुँचाया।

यद्यपि उसकी मौलिकता आज भी दिव्य है, जरूरत है नारी को आत्मबोध कराने की। उसकी भावना को समुचित सम्मान, स्नेह, प्रोत्साहन, शिक्षण, उत्कृष्ट संकल्पना से भरा जा सका, तो नारी के व्यक्तित्व पर जमी राख हटेगी और वह पुनः अभ्युदय प्राप्त करेगी। जैसे अंगारे पर यदि राख की परत अंगारे की ज्वलनशीलता, ताप की प्रचंडता को प्रकट नहीं होने देती, ठीक वैसे ही आज की नारी भी कोयले के ढेर में उपेक्षित पड़े हीरे की तरह हो गई है। अब व्यक्तिगत स्तर से संगठनात्मक, संवैधानिक, सरकारी व वैश्विक सहकार भाव से नारी को पुनः उसकी गरिमा दिलाना ही होगा। इसके लिए हर स्तर पर प्रयास जरूरी है।

नारी का सम्मान जहां है: प्रथम जरूरत है घर-परिवार की चहरदीवारी के बीच ही उसे अपनों के बीच समुचित सम्मान मिले। पर्दा से कसी दासीभाव से हटकर उसे देखा जाय, लड़का-लड़की के बीच भेदनीति बदली जाय, उसे भावानात्मक पोषण एवं तर्क-तथ्यों के सहारे मौलिकता से जोड़े। नारी की भावुक मानसिकता के दोहन एवं शोषण से उसे बचाया जाय। घर में पिता, भाई, पति, देवर सभी उसे प्रसन्नता प्रदान करें और उसे पारिवारिक दायित्वों के निर्णयों में भागीदार बनायें। इस प्रकार वह अप्रत्यक्ष रूप से लोहे की जंजीरों में जकड़ी दासी मानसिकता से मुक्त होगी। इसी के साथ उसे सोने के जंजीरों से भी मुक्त करना पड़ेगा।

रमणी नहीं कर्मणी है- वैदिक युग के अवसान का सबसे बड़ा दंड नारी जाति को मिला। उसकी न केवल प्रतिष्ठा, गरिमा खोई, अपितु उसे भोग की वस्तु के रूप में परोसा जाने लगा। राजतन्त्र से लेकर समाज तन्त्र ने उसका दोहन ही किया। दोहन के पराकाष्ठा की परिणति उसे दास जैसी हीनता भरे जीवन के रूप में चुकाना पड़ा। आज वह परिस्थितियां बदली, आज हरम नहीं हैं, पर नारी आज भी छली जा रही है। उसे सोने-चांदी से लादकर रूप-लावण्य की गुड़िया बनाई जा रही है। आश्चर्य कि इसमें वह नारी भी खुश है। यह दूसरे प्रकार का नारी जाति के प्रति धोखा है। जरूरत है नारी को ऐसी विसंगतियों से बचाने की।

नारी शक्ति को बढ़ावा- यद्यपि आज वह उच्च शिक्षा में भी पारंगत हो रही है, लेकिन ज[illegible]न है उसकी गरिमा अनुसार बौद्धिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण की। कभी वह युद्ध संचालन में कुशल थी। कैकई और दशरथ का उदाहरण सामने है। अतः उसे हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है।

नारी में ऐसे कौशल भरे जाएं कि वह अपने जीवन के कुशल संचालन के साथ-साथ आवश्यकतानुसार उपार्जन भी कर सके। तथा यथा अवसर दूसरों को भी आश्रय व सहयोग दे सके। क्योंकि जिस समाज व देश में स्वाभिमानी, श्रमशील, सुसंस्कृत नारी समूह है वह समाज प्रगति करेगा ही।

जरूरी है श्रमशक्ति का निखार: अनेक देशों में पुरुषों द्वारा भोजन पकाने आदि घरेलू कार्यो में नारी का हाथ बटाने की श्रेष्ठ परम्परा है, इससे उसे घर की सुव्यवस्था, स्वच्छता में मदद मिलती ही है, अपितु स्वयं के सुविकसित, सुसंस्कृत एवं सुयोग्य बनने का समय भी मिलता है। पर विश्व की आधी आबादी, आज भी अपनी श्रम शक्ति को उपेक्षित रखने के लिए विवश है। आवश्यकता है नारी की श्रम शक्ति को जागृत करके उसे सुनियोजित करने की। तभी विश्व का समुचित निर्माण संभव होगा। युग परिवर्तन के द्वार तभी खुलेंगे जब युग के साथ नारी कदम से कदम मिलाकर बढ़ेगी। मानव में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग लाने के लिए पहले नारी शक्ति को निखारना होगा। पर पहल इसके लिए पुरुष समाज को ही करनी पड़ेगी। स्वस्थ शरीर, सुसंस्कारी जीवन शैली, संतुलित मनोबल अनुभव और कौशल जागरण से गढ़ी गयी नारी ही राष्ट्रीय-वैश्विक दायित्व निभाने योग्य बन [illegible]कती है।

[illegible]सिलाई मशीन दान की गयी

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की दूसरी [illegible]खा गुरुकुल अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि [illegible]श्रम फ[illegible]रुखनगर गुड़गांव को श्री रामकिशोर ज[illegible] बंसल [illegible]नाज मण्डी, बहादुरगढ़ द्वारा 4420/- रूपये की [illegible]सिलाई मशीन पैरो वाली दान की गयी। श्री बं[illegible] परिवार को आश्रम की ओर से मंगल कामन[illegible]

किशोरावस्था में प्रजनन: स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव

– वैद्या गरिमा तिवारी

सामान्यत: किशोरावस्था का तात्पर्य 10 वर्ष से लेकर 19 वर्ष तक का आयुवर्ग है। यह बचपन के वयस्कता में बदलने की अवस्था है। इस अवधि की विशेषता शारीरिक, मानसिक और भावात्मक परिवर्तन है, जो विवाह, मातृत्व और उपार्जन सहित जीवन के सभी पहलुओं की वयस्क भूमिकाओं के लिए व्यक्ति को तैयार करते हैं। सामान्यत: इन परिवर्तनों को स्वयं किशोर और वयस्क ठीक-ठाक समझ नहीं पाते। यदि किशोरावस्था में कोई लड़का या लड़की इन शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों के कारण यह महत्व को न समझ पाये, तो उसमें गहरी चिंता और असामान्य व्यवहार का विकास हो सकता है, जो कभी-कभी शरीर और व्यक्तित्व को स्थायी क्षति पहुंचा सकता है।

किशोरों को जिस समस्या से दो-चार होना पड़ता है, उसकी विशालता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इस आयु वर्ग में 19 करोड़, अर्थात् भारत की संपूर्ण आबादी का 20 प्रतिशत किशोर शामिल है। निरंतर बढ़ती हुई इस विशाल आबादी का आधा या तो यौन कार्यो में सक्रिय है या तो विवाहित के लिए है। ग्रामीण भारत में विवाहित किशोरियों का प्रतिशत लगभग दूना है। परिणामस्वरूप यह विराट किशोर आबादी, मातृत्व की सभी समस्याओं का, विशेष रूप से मां और नवजात शिशु की मृत्यु और विकलांगता के खतरों का सामना करती है। अनुमान है कि इसका आधा भाग कुपोषणजन्य रक्ताल्पता का शिकार है। किशोर आबादी देश का बुनियादी सशक्त मानव संसाधन है। इस संसाधन का इष्टतम विकास सुनिश्चित करना आवश्यक है। यद्यपि बच्चों और वयस्कों की समस्याओं की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। उनकी आवश्यकताएं भिन्न और विशिष्ट हैं, जो अनूठी भी हैं। इन्हें भलीभांति समझना जरूरी है, जिससे मानव जीवन चक्र के विकास की इस संक्रमण अवस्था में उनकी सहायता की जा सके।

मानव जीवन चक्र में वृद्धि और विकास किसी एकरूप तरीके से नहीं होता, बल्कि दो बड़े स्फुरणों में-एक बचपन में और दूसरा किशोरावस्था में होता है। लड़के-लड़कियों में किशोरावस्था की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नवत् हैं।

लड़कों में यौवनारंभ-लड़कों में वृद्धि का स्फुरण शीघ्रातिशीघ्र 10 वर्ष की आयु से लेकर विलंम्ब से 16 वर्ष की आयु तक हो सकता है, पर सामान्यत: वे इस मामले में लड़कियों से दो साल पिछड़ते हैं। स्वरयंत्र में भी वृद्धि का स्फुरण होता है, जिसमें बढ़ते हुए लड़कों की आवाज में 'फटाव' और गंभीरता आती है।

आवाज के फटने के साथ ही, एक तिहाई किशोरों में होने वाली स्तन ऊतक की वृद्धि असमंजस का दूसरा कारण है। इसके साथ दाब वेदना भी हो सकती है किन्तु इसमें शोथ का कोई अन्य लक्षण जैसे लालिमा नहीं होनी चाहिए। प्राय: एक से दो वर्ष में स्तन ऊतक की मात्रा पुन: घट जाती है, पर प्रभावित लड़कों में इसकी उतनी अविध तक उपस्थिति भारी चिंता का कारण हो सकती है।

जो लड़के अपने साथियों की अपेक्षा देर से विकसित होते हैं वे अपने छोटे कद के कारण छोड़े जाने या आत्मबोध के कारण से चिंतित रहते हैं। चेहरे के बाल, शरीर के बाल, जघन रोम तथा अंडकोष एवं शिशन की वृद्धि आदि गौण यौन विशेषताओं का विकास एक साथ होता है। पुरुष में शरीर के रोयों का विस्तार बहुत बड़ी सीमा तक अनुवांशिक विशेषताओं से निर्धारित होता है।

हालांकि पुरुषों में, वृद्धि के स्फुरण के अपेक्षाकृत विलंम्ब से होने का रूझान है, फिर भी वह सर्वोच्च बिन्दु पर पहुंचने के बाद भी लम्बे समय तक बढ़ता रहता है। यौवनारंभ की इस अवस्था में शारीरिक विकास की अत्यंत असाधारण विशेषता अनवरत बढ़ती ताकत और शारीरिक श्रम की क्षमता है।

लड़कियों में यौवनारम्भ- यौवनारम्भ में पग रखते समय लड़कियां वयस्क भार का लगभग 60 प्रतिशत प्राप्त कर चुकी होती है। लड़कों के मुकाबले में लड़कियों में यौवनारम्भ काल में शरीर में वसा की वृद्धि होती रहती है, इसमें एक छोटा अंतराल उनकी ऊँचाई में स्फुरण से पहले आता है, जब वसा का जमाव मंद पड़ जाता है। यौवनारंभ काल में लड़कियों में सामान्यत: वसा में कभी कमी नहीं होती है।

औसतन यौवनारंभ का प्रवर्तन 11 वर्ष की वय में होता है। 95 प्रतिशत सामान्य लड़कियों में स्तन विकास

को बंध्यत्व की ओर ले जा सकता है। निर्धारित समय से पहले की यौन सक्रियता से जुड़ा दूसरा रोग है, गर्भाश्य ग्रीवा कैसर। यद्यपि रोग का विकास प्राय: बाद में, वयस्क जीवन में होता है, तब भी यह ध्यान देने की बात है कि यदि प्रथम संभोग निर्धारित समय से पहले (14-15) वर्ष की आयु में होता है तो इस रोग के होने का खतरा दुगना हो जाता है। प्रजनन पथ संक्रमण और यौम साथियों की प्रचुरता भी खतरे के ज्ञात घटक हैं।

घटिया जननांगी स्वस्थ, निर्धारित समय से पहले विवाह की पूर्ण परिणति और यौन-साथियों की बहुलता गर्भाश्ग्रीवा का कैंसर उत्पन्न कर सकती है।

किशोरावस्था में गर्भधारण, उनके एवं गर्भ की शिशु दोनों के लिए घातक हो जाता है, विशेषकर उनके लिए जिनकी आयु कम हो। भारत में कुल प्रजनन का 17 प्रतिशत 15-18 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं के कारण हैं। ❑ गर्भधारण का सबसे महत्वपूर्ण खतरे का घटक आयु एवं पैरिटी (गर्भधारण का क्रम) है। 18 वर्ष से कम आयु में गर्भधारण करने वाली लड़कियां सबसे ज्यादा खतरे में रहती हैं। ❑ किशोरियों में मातृ स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले चिकित्सकीय कारण एक विशिष्ट पैटर्न दर्शाते हैं। ये है। विषरक्तता, अवरूद्ध प्रसव तथा गर्भपात। ये रोके जा सकते हैं। ❑ अवरूद्ध प्रसव, प्रसूति नासूर (फिस्टुला) पैदा कर सकता है। इससे मल-मूत्र का लगातार स्राव शुरु हो जाता है जो संक्रमण तथा जनन अंगों में स्थायी क्षति पैदा करता है। ❑ किशोरावस्था में गर्भधारण गरीब तथा वंचित वर्गो में ज्यादा देखे जाते हैं, जो स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित भी होते हैं। अतएव, उनमें मृत्यु एवं विकलांगता ज्यादा पायी जाती है। ❑ किशोरियों में स्वत: गर्भपात, समयपूर्व जन्म, नवजात मृत्यु तथा कम वजन के शिशुओं के जन्म का ज्यादा खतरा रहता है।

भारत में कच्ची उम्र में लड़कियों के मां बनने की वजह भले ही अशिक्षा, गरीबी और बाल विवाह जैसी कुरीतियां हों, लेकिन आला दर्ज की पढ़ाई-लिखाई और संपन्नता के बावजूद कई विकसित देश भी इससे अछूते नहीं है। हालांकि भारत की स्थिति ज्यादा भयावह है। यहां अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों की तुलना में ज्यादा लड़कियां कम उम्र में मां बन रही हैं। वैसे तो शिशु मृत्यु दर और मातृत्व मृत्यु दर रोकने जैसे मामलों में विकसित देशों ने अच्छी सफलता हासिल की है, लेकिन लड़कियों को कम उम्र में मां बनने से रोकने के मामले में कामयाबी उनसे भी दूर है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की ताजा रिर्पोट (विश्व जनसंख्या 2008) खुलासा करती है कि पूरी तरह विकसित अमेरिका में प्रति एक हजार लड़कियों में से 42, ब्रिटेन में 24 और बुल्गारिया-वेनेजुएला में 40-40 लड़कियां पंद्रह से उन्नीस साल की उम्र में ही मां बन जा रही हैं। रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में शिशु मृत्यु दर (प्रति एक हजार) महज छह तो ब्रिटेन में उससे भी कम, पांच है। इन दोनों देशों में मातृत्व मृत्यु दर भी क्रमश: 11 और 8 प्रति एक हजार है।

भारत में कच्ची उम्र में मां बनने की समस्या गंभीर दक्षिण मध्य एशिया के देशों में स्थिति विकसित देशों से ज्यादा खतरनाक है। भारत में अब भी प्रति एक हजार में से 62 लड़कियां 15 से 19 साल की उम्र में मां बन रही हैं। यहां प्रति एक हजार में से 54 बच्चे प्रसव के दौरान ही मर जाते हैं। इसी तरह, पाकिस्तान में इस आयु वर्ग की 36, नेपाल में 115 और बांग्लादेश में 125 लड़कियां मातृत्व का बोझ उठाने की स्थिति में न होने के बावजूद मां बन चुकी होती है।

पाकिस्तान में शिशु मृत्यु दर भारत से ज्यादा है। पाकिस्तान में प्रति हजार 67 शिशुओं की मौत प्रसव के दौरान ही हो जाती है। इस मामले में चीन की स्थिति अमेरिका, ब्रिटेन से भी अच्छी है। उसके यहां 15-19 वर्ष आयु वर्ग की एक हजार लड़कियों में से महज आठ ही मां बनती हैं, जबकि चीन में शिशु मृत्यु दर भी सिर्फ प्रति हजार 23 है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यू.एन. एफ.पी.ए.) ने इस बार आम जन को ध्यान में रखते हुए संस्कृति, लिंग और मानवधिकारों के मद्देनजर अपनी रिपोर्ट तैयार की हैं।

संयम आदर्श गर्भ निरोधक हैं लेकिन किशोर जन अनियोजित आवेगजन्य एवं छिटपुट यौनाचार में लिप्त हो सकते हैं। इसमें संरक्षणात्मक सावधानी अपेक्षित हैं।

गर्भपात चाहने वालों में किशोरियों की संख्या बहुत बड़ी है और ऐसे बहुत सारे गर्भपात अवैध रूप से कराये जाते हैं जिनमें पेचीदगियां उत्पन्न होती हैं।

यौन रोगों के प्रति किशोर अधिक सुभेद्य होते हैं। यौन रोग आतशक, सुजाक, एच. आई.वी./एड्स जैसे विविध जीवाणुज, प्रोटाजोआजन्य और विषाणुज संक्रमण हैं। ये अंधाधुंध यौन सक्रियता जैसे बहुत यौन साथियों

के साथ यौनाचार और व्यक्तिगत स्वच्छता की कमी से एक व्यक्ति से दूसरे को संप्रेषित होते हैं। ये जनन पथ सहित शरीर को हानि पहुंचाकर स्वास्थ्य को कुप्रभावित करते हैं और गर्भ तथा नवजात शिशु तक को हानि पहुंचा सकते हैं।

सामाजिक विकास में स्त्रियां अत्यंत निर्णायक भूमिका अदा करती हैं फिर भी स्त्री और पुरुष गैर-बराबरी के युग में जी रहे हैं। सौभाग्य से विगत दो दशकों में, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में यह असमानता घटी है। फिर भी प्राथमिक स्वास्थ्य, देखभाल, आर्थिक अवसर, निर्णय लेने का अधिकार आदि के मामलों में आज भी अंतर बना हुआ है। भारत में लैंगिक अनुपात (प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या) घटा है, मातृ, मृत्यु दर तथा मातृ अस्वस्थता दर ऊँची है और स्त्री भ्रूण हत्या और भेदभाव तथा उपेक्षा के ज्वलंत उदाहरण सामने आते जा रहे हैं। अत: यह अत्यावश्यक है कि लड़कियों को लड़कों के बराबर स्वास्थ्य विकास के अवसर मिलें और दोनों भावी अभिभावकत्व तथा स्वस्थ जनन आदतों की जिम्मेदारी बराबरी के साथ उठाएँ।

किशोर के लिए दूसरा महत्वपूर्ण विषय कामवासना है। कामवासना और जनन में जो क्रियात्मक संबंध है उसे समझना बड़ा ही महत्वपूर्ण है। इस बात पर जोर दिया जाना चाहिये कि जनन क्रिया प्रारंभ करने से पहले शारीरिक विकास की पूर्णता परमावश्यक है। किशोरता उसकी तैयारी की अवस्था है और निर्धारित समय से पहले की कोई क्रिया उनके भावी स्वास्थ्य और विकास को संकट में डाल सकती है। और जीवन भर की कठिनाई बन सकती है। इस अवधि में उनकी कामवासना को शांत करने का सर्वोत्तम उपाय संयम है। क्योंकि असंरक्षित यौन व्यवहार गर्भावस्था और यौन रोगों की ओर ले जा सकता है। समयपूर्व की गर्भावस्था (19 वर्ष से पहले की) माता और बच्चे दोनों के जीवन के लिए घातक है। इसलिए श्रद्धेय स्वामी रामदेवजी महाराज कहते हैं कि किशोर और किशोरियों को 'योग नितांत आवश्यक है। इससे इनकी कार्य क्षमता में वृद्धि होगी और वासना की तरफ वे आकर्षित ही नहीं होंगे क्योंकि वे आत्म संयमी हो जायेगें।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	32.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	40.00	रु. प्रति किलो
विशेष	50.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	70.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	125.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम

- एक बार एक पत्नी ने अपने पति से पूछा-कि मैं दो चार दिन नहीं दिखूं तो आपको कैसा लगेगा?

  पति मन ही मन बहुत खुश हुआ और उससे रहा नहीं गया और तपाक से बोल दिया-मेरी तो मौज हो जायेगी, बहुत अच्छा लगेगा फिर उसकी पत्नी सोमवार को नहीं दिखी, मंगलवार को नहीं दिखी, बुधवार को भी नहीं दिखी, गुरुवार को भी नहीं दिखी, शुक्रवार को जब आँखों का सुजन कम हुई तब जाके थोड़ा-थोड़ा दिखी।

- लड़का फोन पर लड़की से 'कहाँ पर हो'

  लड़की- मैं अपने पापा की स्कारपियो में हूँ अभी ड्राईवर मुझे क्लब छोड़ देगा, उसके बाद मॉल से शॉपिंग के लिए जाऊँगी तब तुम्हें कॉल करती हूँ। तुम कहाँ पर हो?

  लड़का-जिस टाटा मैजिक में तुम आगे बैठी हो उसके पीछे मैं लटका हुआ हूं तुम किराया मत देना मैंने दे दिया है।

- पापा-बेटा तुम्हारे रिजल्ट का ये क्या हाल है?

  पप्पु-पापा मेरे नमबर 80 प्रतिशत आये हैं।

  पापा-पर मार्कसीट पर तो चालीस लिखा है।

  पप्पु-बाकी 40 प्रतिशत बाद में सब्सिडी में आयेंगे।

- पति-आलू के पराठों में कट्टी आलू नजर नहीं आ रहा।

  पत्नी-चुपचाप खा लो जी, कश्मीरी पुलाव में क्या कश्मीर नजर आता है।

  संता-कल आपने अपने बच्चे को बहुत पीटा-आखिर ऐसी क्या बात हो गई।

  बंता-दरअसल दो दिन बाद उस बदमाश का रिजल्ट आने वाला है और मैं एक महीने के लिए टूर पर जा रहा हूँ।

स्वामी श्रद्धानन्द व ईसाई प्रचारक

– सत्यानन्द आर्य

स्वामी दयानन्द के शिष्य तथा आर्यसमाज के तपोनिष्ठ स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ अन्य विषयों के अलावा वेदान्त धर्म की शिक्षा भी दी जाती है।

एक बार रूड़की के एक अंग्रेज पादरी ने स्वामी जी को लिखा कि 'मैं' धर्म प्रचार के लिए हिन्दी सीखना चाहता हूं। इसके लिए मैं कुछ माह तक गुरुकुल में रहने की अनुमति चाहता हूँ। मैं आपको वचन देता हूँ कि वहाँ निवास के दौरान ईसाई धर्म का प्रचार बिल्कुल नहीं करूंगा।कुछ दिन बाद पादरी महोदय को स्वामी श्रद्धानन्द का उत्तर मिला, गुरुकुल में आपका स्वागत है। आप हमारे अतिथि बनकर रहेंगे। परन्तु यह भी वचन दीजिए कि गुरुकुल में आप ईसाई धर्म का प्रचार पूरी तरह करेंगे, जिससे हमारे छात्र महात्मा ईसा के जीवन तथा धर्म को भी जान सकें। धर्म आपस में बैर कहना नहीं प्रेम करना सिखाता है।'' पादरी महोदय गुरुकुल आये तो स्वामी जी ने उनके लिए उचित व्यवस्था कर दी और पूर्ण सम्मान के साथ हिन्दी सीखने की सुविधा प्रदान की। गुरुकुल में उन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था।

भारतीय धर्मो के बारे में पादरी महोदय की पूर्व धारणाएं मिट गई और वे स्वामी जी के भक्त बन गए। वे जीवन पर्यन्त स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल के मित्र तथा शुभचिन्तक बने रहे।

वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

प्रख्यात साहित्यकार, सहृदय कवि एवं सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को महात्मा हंसराज जी की 125वीं पावन जयन्ती के अवसर पर 22 अप्रैल 2015 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने संयुक्त रूप से वैदिक विद्वान के रूप में सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए देवभूमि सोलन (हिमाचल प्रदेश) में एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

आसक्ति रहित होने पर प्रभु की प्राप्ति होगी

-कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

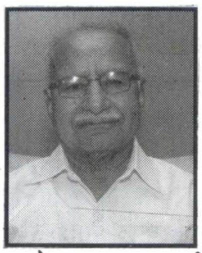
कन्हैया लाल आर्य

समय के साथ-साथ मनुष्य के शरीर का अंग-अंग शिथिल हो जाता है। बाल सफेद हो गये, मुख में दांत नहीं रहे, आंखों में ज्योति कम होने लगी। संसार दूर होता जा रहा है। सम्बन्धों की कड़ी टूटने लगी है। जिस संसार को हमने पकड़ रखा है, अब छूटने लगा। रोगों ने शरीर में घर बना लिया। परन्तु उसके पश्चात भी मनुष्य का मन कितना विचित्र है कि व्याधियों से भरे हुए इस कांपते शरीर में भी अनेक प्रकार की आशाएं जगी है। जो हम बार-बार ठुकराते हैं, हम उन्हीं के मोह में पड़ने की इच्छा होती है। जो संसार मिलकर बिछुड़ जायेगा, उसी संसार के प्रति आसक्ति बनी रहती है।

ऋषियों ने कहा-हे मानव! कब तक इस संसार की आसक्ति में पड़ा रहेगा। आशाएं-आकांक्षाए छोड़। प्रभु के भजन कर। बुद्धि से चिन्तन कर। आत्मा को समझ। अपने आप को बुद्धिमान-कहलाने वाले मूर्ख! जिसका नाम जपना चाहिए था, उसका नाम जप। दुनिया का नाम तू जपता है, जिन संबंधों का, जिस तन पर तू अभिमान करता है, यह तेरे होने वाले नहीं है। यहाँ ऋषियों का भाव यह है कि इस शरीर की वास्तविकता को समझो। केवल उपयोग के लिए यह शरीर मिला है। यह एक साधन है। इसे साध्य मत समझ बैठो। संसार में अपनी यात्रा चलाओ परन्तु शरीर को सब कुछ मत मानो। शरीर में बैठे हुए चेतन तत्व को जानो। इस अंग-प्रत्यंगो के माध्यम से जो भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्म कर रहा है, इसे समझने का प्रयास करो।

हमारी आत्मा तोते के समान है और यह शरीर पिंजरे के समान है। जिस प्रकार तोता पिंजरे से प्यार करके भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियां बोलता है। इसी प्रकार हमारी आत्मा भी इस शरीर से प्यार लगाए बैठी है। कभी उसके अन्दर बैठ कर रोती है, कभी हंसती है। कभी सुख को, कभी दु:ख को अनुभव करती है। यदि हमारी आत्मा इस शरीर को प्यार करने के स्थान पर इसके अन्दर बैठे हुए परमात्मा को प्यार करना प्रारम्भ कर दे, उस अमृत को पीना प्रारम्भ कर दे तो सदा-सदा के लिए देह के बन्धनों से स्वतन्त्र हो जाये।

जिस समय आत्मा का सम्बन्ध इन्द्रियों से दूर हो जाता है, उस समय अंगों को काटने पर भी पीड़ा नहीं होती। जिस तरह डाक्टर शल्यक्रिया (आप्रेशन) के समय जिस अंग का आप्रेशन करना होता है, उसका सम्बन्ध शेष शरीर से काट देता है अर्थात् उस समय उसका वह अंग सुन्न कर दिया जाता है, उस समय उस अंग में किसी पीड़ा का अनुभव नहीं होता। परन्तु जब वह अंग पुन: सुन्न की स्थिति से उबर कर आते हैं, तो उस समय उस दु:ख का अनुभव होता है। यही अनुभव ही चेतन तत्व का बोध है। यही चेतन जिस दिन इस शरीर को त्याग देगा तो उस शरीर का कोई मूल्य नहीं रहेगा। इसकी सुन्दरता भी समाप्त हो जायेगी और यह भयानक हो जायेगा। इसकी पवित्रता भी समाप्त हो जाएगी। कोई भी इसे स्पर्श करना भी पसन्द नहीं करेगा और यदि स्पर्श कर लिया तो उन हाथों को भी धोना पड़ेगा। कोई इसे अपने घर में अधिक देर तक नहीं रखेगा। शीघ्र-अति-शीघ्र इसका संस्कार करने का परामर्श मिलने लगेगा। जिस शरीर को देखकर परिवार वाले विशेषकर पत्नी जो सात जन्मों का साथ निभाने की कसमें खाती थी, पुत्र पौत्र आदि प्रसन्न हुआ करते थे, वही लोग आज इसे शीघ्र अति शीघ्र मुखाग्नि देने के लिए तत्पर हो जाते हैं। अत: हमें बैठकर विचार करना होगा कि यह शरीर क्या है? इस शरीर में बैठा हुआ चेतन तत्व क्या है? संसार में हम किस लिए आये हैं, क्यों आए हैं? मेरे जीवन का परम लक्ष्य क्या हैं?

व्यक्ति आज अहंकार रूपी रोग से पीड़ित है। ईट पत्थरों पर अपना नाम लिखकर कि यह भवन मेरे है, यह फैक्टरी, दुकान मेरी है, ऐसा सोचकर प्रसन्न हो रहा है। परन्तु जब यह नाशवान शरीर अग्नि की भेंट चढ़ जाता है तो यह सब कुछ पराया हो जाता है। अब हमें इस नाशरहित सत्य को समझना होगा। उस चेतन तत्व को जानना होगा। जिस तरह इस पेट की भूख, मिटाने के लिए भोजन करते हैं। मन को मनोरंजन करवाते हैं इस प्रकार आत्मा रूपी चेतन तत्व की भूख को मिटाइये। आत्मा को तृप्त कीजिए। आत्मा की तृप्ति मिलेगी सेवा से, साधना से, सत्संग से,

स्वाध्याय से, सन्तोष से, समर्पण से। भगवान् के अमृत रस से तृप्ति मिलेगी।

आप सोचिए जब आपके मन ने कहा कि कोई उपकार का कार्य किया जाये और आन ने कर लिया। परन्तु इससे न तो आपका पेट भरा, न आप के मन को कुछ हुआ, न बुद्धि में कुछ बात आई। परन्तु आप के अन्तरमन में एक सन्तोष का अनुभव अवश्य हुआ। इस सन्तोष का परिणाम यह हुआ कि आप का हृदय आनन्दित हो जाता है। अपने आप खाकर वह आनन्द नहीं मिला होगा जो दीन दुःखियों तथा भूखे-निर्धनों को खिलाकर होता है। मैं यह बात आप से कहूं और आप मान लें, ऐसा नहीं। बल्कि इस कार्य को आप स्वयं करके देखें। आप अनुभव करेंगे कि आप को इन परोपकर के कार्यो से सन्तुष्टि मिल रही है। इसी सन्तुष्टि का नाम तो है प्रभु की निकटता।

परमात्मा को पाने के लिए बाल-बच्चों को त्यागने की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि संसार में रहते हुए संसार के कार्य व्यवहार को करते हुए अपना कर्त्तव्य समझकर अपने अन्दर ही वैराग्य उत्पन्न करना है। खाने के लिए नहीं जीना, जीने के लिए खाना है। उस वैराग्य को धीरे-धीरे पक्का, करते जाना है। यहां पर हमारा उद्देश्य यह न हो कि लोग हमारी प्रशंसा करे, हमारा मान सम्मान करें, हम को महत्व दें। यदि हम इन सारी बातों में पड़े जायेंगे तो हम अपने मार्ग से भटक जायेंगे। हमारा मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, वही हमारा उद्देश्य यह न हो कि लोग हमारी प्रशंसा करे, हमारा मान सम्मान करें, हम को महत्त्व दें। यदि हम इन सारी बातों में पड़ जायेंगे तो हम अपने मार्ग से भटक जायेंगे। हमारा मुख्य लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, वही हमारा उद्देश्य है। जिस को पाने के पश्चात् कुछ शेष नहीं रहता। जिस दिन 'मैं' की भावना समाप्त हो जायेगी। जिस दिन हम यह कह देंगे कि कोई मेरा नहीं केवल प्रभु की शरण ही सच्ची है। संसार के कर्त्तव्यों को तो पूरा करेंगे परन्तु इस संसार में आसक्ति में नहीं पड़ेंगे। उस समय देह, स्थान, पदार्थ, सम्बन्धों की आसक्ति मिट जाएगी, सभी मोह-ममता के बन्धन टूट जायेंगे केवल और केवल प्रभु की प्राप्ति ही उद्देश्य बन जायेगा तभी हमारा कल्याण होगा।

– 4/44, शिवाजी नगर, गुड़गाँव, हरियाणा,
चलभाष-09911197073

ओ३म नाम जप ले

– महावीर सिंह, नीलवाल, दिल्ली, मो. 9668029138

ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।
पगंले ओ३म नाम जप ले, भाई ओ३म् नाम जप ले।
अगली कमाई कर ले, कुछ नेक काम कर ले।
भवसागर को तर ले, इतना प्रबन्ध कर ले।
पापों से किनारा कर ले, धर्म की डोर पकड़ ले।
ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।

राग, द्वेष से सम्बन्ध तोड़ लें, प्रभु से तार जोड़ ले।
कस कर डोर पकड़ ले, मुक्ति की लौ लगा ले।
भक्ति की ठान ले, मन-मन्दिर को साफ कर ले।
ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।

वेद, शास्त्र पढ़ ले, सच और झूठ छान ले।
सत्संग में शामिल हो ले, आर्यो की बात मान ले।
आवागमन से निकल ले, ऐसी युक्ति कर ले।
ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।

काम, क्रोध को छोड़ दे, यम-नियम का पालन कर ले।
मायाजाल से बचा ले, परम पिता में ध्यान लगा ले।
रसना में रस घोल ले, मीठी बाणी बोल ले।
ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।

हृदय को पवित्र कर ले, आत्मा को जान ले।
पाँचो शत्रु पहचान ले, इन्द्रियों को वश में कर ले।
दुष्टों से मुँह मोड़ लें, सज्जनों से मेल कर ले।
ओ३म् नाम जप ले, रे प्राणी ओ३म् नाम जप ले।

गरीबी

– कृष्ण सौमित्र साहित्यकार लंकार

गरीबों की दुनिया में आकर तो देखो
गरीबों को अपना बनाकर तो देखो
ठगो ना हमें झूठें वायदों से लोगो
गरीबी हमारी मिटा कर तो देखो
बनेगा ये भारत सोने की चिड़िया
इन हाथों को ताकत दिलाकर कर तो देखो
देखनी हो तुमको जो मेहनत हमारी
अपना पसीना बहाकर तो देखो
ना तन पे है कपड़ा ना भर पेट रोटी
अमीरी का चश्मा हटाकर तो देखो।

गोस्वामी तुलसीदास और चोर

गोस्वामी जी विरक्त होकर घरबार त्यागकर निकले ही थे। एक बार रात्रि को विश्राम करके आधी रात से पहले ही चल पड़े। बस्ती से आगे कुछ ही दूर पर उन्हें आठ-दस व्यक्ति मिले, जो चोर थे। इनको देखकर चोरों के मुखिया ने कहा कि 'लो, बोहनी तो इससे ही कर लो। जो इसके पास हो, छीन लो!' यह सुनकर दो चार यात्री के पास आए और देख-दाखकर कहने लगे, है तो इसके पास कुछ नहीं।' चोरों के मुखिया ने गोस्वामी जी से पूछा, 'तुम कौन हो?' ये तो वैराग्य के नशे में थे ही, उत्तर दिया-'जो तुम हो सो हम हैं।' अभिप्राय था-तुम भी मनुष्य हो, मैं भी एक मनुष्य हूँ। किन्तु चोरों के शब्दकोश के आधार पर इसका अर्थ हुआ कि मैं भी एक चोर हूँ। इस उत्तर पर स्वाभाविक रूप से विश्वास इसलिए जम गया कि और कौनरात्रि को सुख की नींद छोड़कर अन्धकार में ठोकरें खाता फिरेगा? चोरों के नेता कहा-'यदि तू भी वही है जो हम हैं तो आज की रात हमारे साथ मिलकर काट ले।' इसपर गोस्वामी जी उनके साथ हो लिये। चोर भी जिस गांव में, जिस घर में उन्हें नकब लगानी थी, वहाँ पहुँचे। नेता ने सबकी ड्यूटियाँ-कौन अन्दर जाएगा, कौन बाहर रहेगा-आदि आदि बाँट दी। इस क्रम में गोस्वामी जी को बाहर रहकर निगरानी का काम सौंपा। साथ ही यह भी कहा कि-'देखो, लोग जग जावें अथवा और कोई खतरे की बात हो तो चिल्ला मत पड़ना! खुदी हुई मिट्टी की मुट्ठी भरके अन्दर फैंक देना। इससे हम समझ लेंगे कि खतरा है।' गोस्वामी जी ने कहा कि-'यही करूँगा।'

चोर नकाब लगाकर अन्दर चले गए। वे यह देखते फिर रहे थे कौन-सा ताला तोड़े, क्या-क्या लें? गोस्वामी जी बाहर खड़े सोचने लगे कि -मुझे यह काम सौंपा गया है कि अगर हमारे साथियों को कोई देखनेवाला हो तो मैं मुट्ठी-भर मिट्टी अन्दर फैंककर उन्हें सूचित कर दूँ। विचार आया कि-यह तो ठीक है कि इन्हें कोई मनुष्य नहीं देख रहा, पर वह भगवान् तो देख रहा है जो सब जगह व्यापक है। बस, इस विचार के आते ही मुट्ठी अन्दर फैंक दी। 'चोरों के पैर नहीं होते' कहावत है ही। उन्होंने अनुमान लगाया कि लोग जाग गए दीखते हैं, इसलिए भागना चाहिए। सब निकल-निकलकर भागे। साथियों को भागता देखकर गोस्वामी जी ने भी दौड़ लगाई। सब भागकर बस्ती के बाहर किसी सुरक्षित स्थान पर इकट्ठे हुए तो चोरों के नेता ने गोस्वामी जी से पूछा- 'क्या बात थी? लोग जाग गए थे?' उत्तर मिला 'नहीं।' और कोई खतरा था?' गोस्वामी जी ने फिर 'नहीं' कहा। इन उत्तरों से क्षुब्ध होकर चोरों के नेता ने कहा-'यह पागल कहाँ से साथ लगा लिया!

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

क्या किसी विशेष कार्य के लिए यात्रा पर जाते समय 'दिशा-शूल' आदि का विचार करना चाहिए?

- डॉ. गंगाशरण आर्य

दिशा शूल की मान्यता बहुत लम्बे काल से हिन्दुओं में प्रचलित है। लेकिन इसका क्या मन्तव्य है, कभी किसी हिन्दू भाई ने जानने का प्रयास ही नहीं किया? बस मन्दिरों में बैठे ब्राह्मण का वेश धरे धन-लोलुप पण्डे व पुजारियों ने कह दिया और इन्होंने मान लिया अर्थात् अन्धश्रद्धा पूर्वक कार्य करने लगे। हम यह विचार ही नहीं करते कि हमारा देश गुलाम ही अन्धविश्वास के कारण हुआ। गुलामी के भयावह काल के बाद हमारे देश को गरीबी का मुख देखना पड़ा था जिसके परिणाम स्वरूप हमारे कुछ पंडित भाई थोड़े से धन के लिए अपना ब्राह्मणत्व (वेद का पढ़ना पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, वेद विद्या के लिए दान लेना और देना आदि) छोड़कर अपना अस्तित्व औचित्य सिद्ध करने के लिए, अपनी उदरपूर्ति हेतु (महर्षि व्यास जी के नाम से) अनेक कल्पित कहानियाँ पुराण आदि के रूप में गढ़ ली और लोगों का धन ऐंठने लगे। दिशा-शूल भी लोगों को भयभीत कर उनके द्वारा अपने से बाँधने और धन लूटने का ही एक उपाय है और कुछ नहीं। आईए इसके विषय में विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं।

दिशा-शूल दो शब्दों से मिलकर बना है-एक दिशा और दूसरा शूल। दिशा का अर्थ साफ है, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण ये चार दिशायें होती हैं। शूल का अर्थ होता है कांटा। साधारण शब्दों में कहे तो दिशा-शूल का अर्थ हुआ जिस दिन जिस दिशा में यात्रा करने में हमारा अहित हो उस दिन को उस दिशा की यात्रा में दिशा-शूल कहते हैं। भारतवर्ष के गाँव तो क्या बहुतेरे शहरों में भी कुछ दिन दिशा-शूल के लिए नियत है जैसे बुधवार को कोई भी विवाहित स्त्री न तो अपने मायके से ससुराल जा सकती है और न ही ससुराल से मायके में जा सकती है। इसी प्रकार श्राद्ध के दिनों में भी स्त्रियाँ अपनी यात्रा दिशा-शूल के भय से वर्जित रखती हैं। क्योंकि अगर इन दिनों में उन्होंने यात्रा की तो कुछ न कुछ दुर्घटना या अनिष्ट उनके या उनके सगे-सम्बन्धियों के साथ अवश्य हो सकता है ऐसा उन्हें कह दिया जाता है और मन में पूर्वोक्त भय के कारण वे बेचारी अपनी यात्रा स्थगित कर देती हैं फिर चाहे वह अनपढ़ हो या पढ़ी-लिखी इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी अपनी बहुत सी यात्राएं सिर्फ दिशा-शूल के भय से रोक देता है और यदि उस दिशा का कार्य अति आवश्यक है जो किसी भी कारण से न टाला जा सके तो पण्डित जी से उस शूल के निवारण हेतु उपाय पूछने लगता है और अपने आप को विद्वान कहने वाले धन-लोलूप पण्डे व पुजारी जिन्होंने ज्योतिष विद्या को ठीक से न जाना है न समझा है वे दिशा-शूल निवारण हेतु उपाय भी सुझाने लगते हैं क्योंकि उन्होंने कभी गणित ज्योतिष को पढ़ा ही नहीं है। वे गणित ज्योतिष से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। वे इस लूट के लिए अनेक फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का सहारा लेते हैं जो निराधार है जैसे-

सुलभ ज्योतिष के अनुसार सोमवार, शनिवार को पूर्व दिशा की यात्रा वर्जित है। मंगलवार, बुधवार को उत्तर दिशा की एवं रविवार और शुक्रवार को पश्चिम दिशा की यात्रा तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है। इसी प्रकार इन दिनों में विभिन्न उपाय भी दिशा-शूल के निवारण हेतु ये बताते है जैसे सोमवार को खीर मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को गर्म घी, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को गर्म दूध और शनिवार को तिलान्न एवं रविवार को मलाई खाकर यात्रा करने से दिशा-शूल का दोष दूर हो जाता है। अब आइए जरा विचार करते है कि इनके इस दिशा-शूल और उसके निवारण के उपायों का क्या औचित्य है? इनकी क्या वास्तविकता है? उपरोक्त जानकारी के अनुसार सप्ताह के सातों दिनों में, प्रत्येक वार को किसी न किसी दिशा में यात्रा करना मना है। तो एक बात बताओ जिस दिन जिस दिशा में यात्रा करना मना है उस दिन उसी दिशा में बारात ले जाने का मुहूर्त अगर किसी का निकल आए तो क्या करेंगे? क्या बारात नहीं ले जाएंगे? इसी प्रकार उस दिन यदि उसी दिशा में किसी खास रिश्तेदार के यहाँ विवाहोत्सव

अथवा मृत्यु हो जाने पर उनके सुख-दु:ख में शामिल होने नहीं जाओगे? क्योंकि, मृत्यु अथवा विवाहोत्सव आदि तो सप्ताह के सातों दिनों में ही होते हैं और सप्ताह के सातों दिनों में यानि कि सोमवार हो या मंगलवार, बुधवार हो या वीरवार, शुक्रवार हो या शनिवार या फिर रविवार ही क्यों न हो प्रतिदिन किसी न किसी दिशा में यात्रा करने पर मनाही है तो क्या सारी दिशाएं और सारे दिन दुर्घटना सूचक हैं? कहीं न कहीं की यात्रा तो बिना किसी अंवरोध के इन पण्डों के द्वारा बताई जानी चाहिए थी। अब आप कहेंगे कि जिसके लिए जिस दिन दिशा-शूल की बाधा है उसे उस दिन उस दिशा में यात्रा न करने पर क्या आपत्ति है? लेकिन मेरा यह विचार है कि प्रत्येक वार को हमारा किसी न किसी दिशा में दिशा-शूल अवश्य है तो क्या जिस दिन जिस दिशा में हमारे लिए दिशा-शूल है क्या उस दिन उस दिशा में यात्री अपनी यात्रा करना छोड़ देते हैं? क्या बसें, रेलगाड़ियाँ, कारें आदि उस दिन उस दिशा में चलना बंद हो जाती हैं? और क्या उस दिन उस दिशा का दिशा-शूल बस चालक या अन्य वाहन चालक चाहे किसी भी वाहन का चालक क्यों न हो उसके लिए हो तो क्या वह उस दिन छुट्टी लेकर घर पर बैठेगा, अपनी ड्राइविंग की नौकरी को खतरे में डालेगा? नहीं, क्योंकि उसे तो हर दिन अपनी नौकरी पर जाकर ही आजीविका मिलेगी। प्रत्येक दिन प्रत्येक दिशा में लाखों लोग यात्रा करते हैं और सभी अपना काम पूरा करके सकुशल अपने घर लौट आते हैं। मान लो कि सुरेश नाम का कोई व्यक्ति जिसके लिए मंगलवार को उत्तर दिशा में जाने में दिशा-शूल की बाधा आदरणीय पण्डित जी ने बताई हो और वह उनके आदेश का उल्लंघन कर उस दिशा में किसी अपने आवश्यक कार्य को करने के लिए चला जाए तो उसके जीवन में क्या दुर्घटना होगी, क्या वे पण्डित जी बता सकते हैं? नहीं बता सकते। क्योंकि वे तो अपने पास आने वालों को यह कर कर डराते हैं कि कुछ भी हो सकता है तुम्हारे साथ या तुम्हारे बच्चों के साथ, या किसी नजदीकी या दूर के रिश्तेदार के साथ। अब जरा सोच-विचार करके बताना कि पण्डित जी की आज्ञा का उल्लंघन तो वह व्यक्ति करे और दुर्घटना घटे बेचारे उसके निरापराध रिश्तेदारों के साथ। इसी संदर्भ में मान लो वह व्यक्ति बिना किसी रूकावट के यात्रा करके जिस काम के लिए गया था वह काम भी बिना किसी विघ्न या बाधा के करके सुरक्षित घर लौट आया और आते ही उसे पता चले कि उसके जाने के कुछ घंटो बाद उसके मामा जो कि लगभग 85 की उम्र में कैंसर जैसी भयावह बीमारी से ग्रसित होकर पहले से ही मृत्यु शैय्या पर पड़े थे, की मृत्यु का समाचार आ गया था तो बताओ क्या यह बुरी खबर उसके द्वारा दिशा-शूल के दिन यात्रा करने से आई थी? अगर आप ऐसा मानते हैं तो ये तो वही बात हुई कि 'करे कोई और भरे कोई' और चलो ये भी मान लो कि उसके किसी प्यारे की मृत्यु कम उम्र में होने की सूचना उसे मिली जो उसी दिशा में रहता था जिसमें कि उसके लिए उस दिन दिशा-शूल था तो बताओ कि क्या वह दोबारा उस दिशा में उस दिन उसके शोक में नहीं जाएगा? अब जो ये मरा है इसका कारण दिशा-शूल कदापि नहीं हो सकता क्योंकि उसे वहाँ जाकर पता लगा कि वह दुकान में शार्ट-सर्किट होकर आग लगने से आग की चपेट में दो दिन पहले ही आ गया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई तो इससे सुरेश की यात्रा का क्या लेना-देना इस प्रकार की दुर्घटना तो किसी के भी साथ कभी भी हो सकती है क्योंकि दुर्घटनाओं पर किसी का कोई वश नहीं चलता। और यह ईश्वर की बनाई सृष्टि का यह भी एक अटल सत्य है कि जो जैसा कर्म करता है उसे उसका फल अवश्यमेव ही भोगना पड़ता है, कोई किसी का किया नहीं भुगतता अत: दिशा-शूल का हमारे कर्मों से कोई लेना-देना नहीं। कहीं-कहीं तो बुजुर्ग महिलाएं दिशा-शूल का प्रभाव वर्ष भर तक मानती हैं अर्थात् यदि दिशा-शूल के दिन आप सकुशल यात्रा कर घर लौट आए और लगभग 4 या 5 महीने बाद या एक वर्ष के भीतर कोई अनिष्ट घर में हो गया तो उसका कारण भी दिशा-शूल को ही माना जाता है। इसका तो एक ही मतलब निकलता है कि परमात्मा के कार्यालय में दिशा शूलों का एक ब्यौरा रहता है और समस्त कागजात कम से साल भर तक तो रखे ही जाते हैं और अजब निराली बात तो यह है कि लोग दिन-रात चोरी-चकारी करते, झूठ बोलते, बेईमानी से धन कमाते हैं और जरा भी यह विचार नहीं करते कि हमारे साथ जो अनिष्ट हो रहा है वह हमारे इन्हीं

कुकर्मों का ही फल है। यदि लोग इस प्रकार गहराई से चिंतन करने लगे तो लोगों के जीवन में सुधार आएगा और लोग पाप कर्म छोड़कर पुण्यात्मा हो जाएंगे। लेकिन कोई यह कभी नहीं कहता कि मैंने अमुक के साथ व्यापार में धोखा किया था या किसी निर्दोष को झूठे केस में फँसाया था जिससे उसे जेल हो गई थी, शायद मेरे इन्हीं कुकर्मों के कारण आज मेरे साथ फलां-फलां अनिष्ट हो रहा है। क्या कभी इस प्रकार कहते सुना है आपने किसी को? कभी ऐसा कोई नहीं कहता, सब के सब अपने साथ हुए अनिष्ट का दोष ग्रह-नक्षत्रों, राशि और तारों, दिशा-शूल और तिथि दोष आदि पर मढ़ देते हैं अपने कृत कर्मो पर किसी का ध्यान ही नहीं है। ईश्वरीय कर्म-फल व्यवस्था को न समझने के कारण ही हम ऐसी भ्रान्त धारणा बना लेते हैं लेकिन इन ग्रह-नक्षत्रों का, राशि और तारों का, तिथि दोष और दिशा-शूल आदि का हमारे साथ हुए अनिष्ट से कोई लेना-देना नहीं है। क्योंकि यह सिर्फ हमारा भ्रम ही है और कुछ नहीं। यहाँ एक 'बात और विचारणीय है कि क्या रोजाना होने वाली दुर्घटनाएँ दिशा-शूल आदि के कारण ही होती हैं? नहीं, क्योंकि हर दिशा में हर रोज वायुयान, रेलगाड़ी आदि चलती हैं लेकिन कोई गार्ड यह नहीं पूछता कि आज पूर्व की ओर जाना चाहिए, आज पश्चिम की और जाना चाहिए और इनमें लाखों लोग हर दिशा में यात्रा करते हैं। उन लाखों यात्रियों में से कुछ लोगों का यदि काम नहीं भी बन पाता और कुछ के साथ यदि कोई दुर्घटना भी हो जाती है एवं किसी-किसी का भारी नुकसान भी हो जाता है तो उनके सबके साथ हुई अनहोनियों का कारण दिशा-शूल तो हो ही नहीं सकता। वह तो उनके अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मो का ही फल होता है। ऐसी दुर्घटनाएं तो घर पर बैठे-बिठाए भी हो जाती है। सोचिए जरा यदि पण्डित जी के पत्रे में देखकर रेलें आदि चला करें तो संसार के सारे व्यापार चौपट हो जाए, कोई काम न चले। विचार करने की बात यह है कि जब भारत में एस.एस.सी. परीक्षाओं का समय होता है तो सम्पूर्ण भारत के हजारों-लाखों बच्चे अपने-अपने क्षेत्रों से बहुत दूर-दूर परीक्षाएं देने आते हैं और हर दिशा से आते हैं क्या वे सभी दिशा शूल का विचार करते हैं? यदि ऐसा विचार करने लगेंगे तो अपनी दकियानूसी सोच के कारण वे अपने जीवन में आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर खो देंगे। क्योंकि परीक्षार्थियों के लिए तो दिशाओं का हिसाब लगाकर अलग-अलग समय नियत नहीं हो सकता। और गहराई से चिंतन करना तो पता लगेगा कि कई बार ऐसा होता है कि आप व आपके कोई भी रिश्ते नातेदार घर से कहीं बाहर भी नहीं जाते और फिर भी आपके साथ कुछ अनिष्ट हो जाता है, तो क्या आप उसका दोष भी दिशा-शूल को दोगे? अच्छा और एक बात का सीधा-सीधा उत्तर दो कि यदि किसी वार को किसी दिशा में जाने से धन-लाभ इन पण्डितों (फलित ज्योतिषियों) को होता हो और दुर्भाग्य से इनके लिए उस दिन उस दिशा में यात्रा करने में दिशा-शूल हो तो क्या ये उस दिशा की ओर प्रस्थान नहीं करेंगे? ऐसा कदापि हो ही नहीं सकता कि ये न जाए। अतः हमें अपने भीतर पल रहे अन्धविश्वासों का त्याग करना चाहिए क्योंकि हिन्दू कहे जाने वाले लोगों में ऐसी बहुत सी निर्बलताएं है जिसके कारण लाखों लोग अविद्या के गर्त में पड़कर लक्ष्यविहीन जीवन जी रहे हैं। एकमात्र अविद्या ही इन सब फलित विद्याओं का कारण है।

आईए! जानने का प्रयास करते हैं कि ये पाखण्डी अपनी कमाई का रास्ता कैसे निकालते हैं। मैंने पहले भी बताया कि जब किसी को अति आवश्यक काम से दिशा-शूल की दिशा में यात्रा करना अनिवार्य हो तो ये पैसे के पुजारी दिशा-शूल निवारण के उपाय बताकर अपना उल्लू कैसे साधते हैं शायद ही कोई इनकी इस विद्या से अछूता हो। जब इस प्रकार दिशा-शूल के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए कोई इनके पास आता है तो दिन के हिसाब से ये उसे सोमवार की खीर मंगलवार को मट्ठा, बुधवार को गर्म घी, बृहस्पतिवार को दही, शुक्रवार को गर्म दूध और शनिवार को तिलान्न एवं रविवार को मलाई खाकर यात्रा करने की सलाह देते हैं और कहते हैं कि ऐसा करने से दिशा-शूल का दोष दूर हो जाएगा। मानव कितनी आसानी से इनके बुने इस चक्रव्यूह में फँस जाता है और तनिक भी विचार नहीं करता कि क्या उपरोक्त खीर, मट्ठा घी, दही, दूध, तिलान्न या मलाई आदि खाकर यात्रा पर जाने से दिशा-शूल निवारण हो

जाएगा? यदि दूध, दही, तिल, गुड़, मलाई आदि से भाग्य बदलता तो संसार में कोई भी दु:खी नहीं होता। इन पण्डितों का तो काम ही यह है। पहले तो ये दिशा-शूल आदि बताकर लोगों को भयभीत कर देते हैं और बाद में दूध, मलाई आदि खाने के लिए बताकर प्रसन्न भी कर देते हैं। इस प्रकार दक्षिणा भी मिल गई और दिशा-शूल निवारण भी हो गया। यदि पण्डित जी जाते समय कोई कठिन उपाय बताते तो वह शीघ्रता से हो भी नहीं पाता और यजमान के मन में भय भी बना रहता लेकिन पण्डित जी ऐसा न करके सरल उपाय बताते है क्यों? क्योंकि वह तो अपने यजमान के धन के साथ-साथ उसका भय दूर करके उसका विश्वास भी जीतना चाहता है ताकि भविष्य में भी वह उसके पास इसी प्रकार उसका ग्राहक बनकर आता रहे और पण्डित जी की रोजी-रोटी का धंधा भी चलता रहे। वास्तव में पण्डित जी के बताए उपाय से थोड़े ही कुछ होना था, होता तो तब जब दिशा-शूल वास्तव में खतरा पैदा करने वाली कोई वस्तु होती, यह तो आम आदमी की मानसिक कमजोरी का फायदा उठाकर केवल धन के लोभ में पूजा के नाम पर ढोंग करने वालों के द्वारा फैलाया गया भ्रमजाल ही है और कुछ नहीं। पुरातन काल में घने जंगलों में डाकू-लुटेरों आदि का भय बना रहता था और निजी खेती-बाड़ी आदि के व्यापार के कारण बहुत कम लोग ही अकेले दूसरे क्षेत्रों में जाते थे और किसी को किसी कारण वश जाना भी पड़ता था तो अक्सर लोग टोलियां बनाकर चलते थे परन्तु हर बार ऐसा सम्भव नहीं होता था अत: उनके मन में उपरोक्त लुटेरों का भय बना रहे और उसका फायदा उठाकर पण्डें अपनी जेबें गर्म करते रहें इसके लिए ही शायद इन्होंने ऐसी भ्रमित करने वाली बातें फैलाई हो और भयग्रसित होने के कारण ही हमारे पूर्वज इनके फैलाये इस भ्रम-मूलक जाल में फँसते चले आए हों। लेकिन नयी पीढ़ी के लिए ये बातें लागू नहीं होती क्योंकि आज तो हर क्षेत्र में कारें, बसें और अन्य यातायात के साधन जैसे रेलगाड़ियाँ आदि चलती है यात्रा करना अति आसान हो गया है फिर पुराने रिवाजों के नाम पर आज भी पण्डित जी के पास दिशा-शूल का उपाय पूछने जाना कहा कि बुद्धिमानी है।

अंत में यह अन्धविश्वास रूपी रोग कितना भयंकर है इसकी गणना शायद ही किसी ने की हो। आज के डेंगू और इबोला वायरस से भी अत्याधिक घातक है। सब जानते है कि डेंगू और इबोला वायरस से कितने ही लोगों की मृत्यु हो जाती है लेकिन यह न समझिए कि दिशा-शूल कोई छोटा रोग है यह ढेंगू और इबोला वायरस तो मनुष्य के केवल शरीर पर ही हमला करते हैं लेकिन दिशा-शूल का प्रभाव तो सीधे मनुष्य के मस्तिष्क पर पड़ता है। मानसिक भय के कारण ही तो अन्धविश्वास की जड़े मजबूत होती हैं। शारीरिक रोग के कारण तो केवल हमारा शरीर ही निर्बल होता है लेकिन अन्धविश्वास के कारण तो हमारी पीढ़ियाँ भी नष्ट होने के कगार पर पहुँच जाती है। आज की पीढ़ी को अब अपने अन्दर परिवर्तन करना होगा, उसे समझना होगा कि अब इन भ्रमित करने वाले टोटकों का कोई तुक नहीं? कहने का तात्पर्य यह है कि खासकर महिलाओं को इस असत्य विद्या का न केवल त्याग करना चाहिए बल्कि जड़मूल तक नष्ट कर देना चाहिए ताकि उनके सम्पर्क में रहने वाले अबोध बालक और आने वाली पीढ़िया इस प्रकार के मानसिक आघात पहुँचाने वाले रोग से जीवन-पर्यन्त भयमुक्त हो सके। यही सन्देश आर्यसमाज देता है। इसलिए प्रभु की अमृत वाणी वेद का का आधार लेकर महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के चौथे नियम में कहा है कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए'' और आठवें नियम में लिखा है कि ''अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'' हमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्य को भली प्रकार से समझना होगा ताकि भय के नाम पर चल रही लूट से हम छुटकारा पा सके।

– चरित्र निर्माण मण्डल, ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-110061, मो. 9871644195

भूल-सूधार

चौ. चन्द्रभान जी द्वारा संग्रह दान मध्य अप्रैल अंक में 12000/- रूपये के स्थान पर 1200/- रूपे छप गये जिसका हमें खेद है।

– व्यवस्थापक

देश विभाजन की घोषणा का काला दिवस (03 जून 1947)

कांग्रेस ने स्पष्ट रूप से कहा था कि देश का विभाजन गांधी जी की लाश पर तो हो सकता है अन्यथा नहीं। नेहरू ने कहा था कि देश विभाजन की मांग करने वाले स्वपन देख रहे हैं। मुस्लिम लोग की सीधी कार्यवाही की धमकी देने पर गांधी, नेहरू, पटेल विभाजन के लिए सहमत हो गए। कांग्रेस ने आर्य समाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दू महासभा, फारवर्ल्ड ब्लाक और शिरोमणि अकाली दल को विश्वास में नहीं लिया और न ही उनसे सम्पर्क रखा। धर्म के आधार पर विभाजन करना तय हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)- योग के व्यापक प्रचार प्रसार और इससे होने वाले लाभों को देखते हुए, 21 जून को, 2014 में योग दिवस मनाने की घोषणा की गई है। इसका श्रेय बाबा राम देव को भी हैं जो कई वर्षो से योग प्रशिक्षण केन्द्र लगाकर लोगों को रोगों से मुक्त होने के लिए विभिन्न आसन करके भी दिखाते हैं। बाबा राम देव का यह कहना अच्छा नहीं लगा कि जो ओ३म् नहीं बोलना चाहते हैं वे अल्ला बोल सकते हैं। कल को वे ईसाईयों से कह सकते हैं कि वे गॉड बोल सकते हैं। जब राम देव ने चुनाव नहीं लड़ना है तो वे तुष्टीकरण की राह पर क्यों चल रहें है? ओ३म् ईश्वर अल्ला गॉड का सर्वश्रेष्ठ नाम है। इस पर समझौता क्यों?

नशा निषेध दिवस (26 जून)- गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से आश्वासन दिया था कि स्वतन्त्र भारत में शराब बन्दी लागू की जाएगी क्योंकि शराब के सेवन करने से प्रति वर्ष हजारों परिवार बर्बाद हो जाते हैं। 67 वर्ष हो चुके हैं लेकिन आश्वासन पूरा नहीं हुआ है फिर भी गांधी के नाम पर वोट मांगी जाती है और दी जाती है। यह खेद का विषय है कि शराब बन्दी को राज्यों का विषय बना दिया गया है। किसी किसी राज्य में शराब बन्दी लागू हो जाती है तो निकटवर्ती राज्यों से अवैध रूप से सप्लाई शुरु हो जाती है। कच्ची शराब जहरीली शराब, नकली शराब का अवैध रूप से उत्पादन वितरण और उपभोग से हज़ारों मौते प्रति वर्ष हो रही हैं। चुनाव प्रचार में हजारों बोतलें, पव्वे, थैली निःशुल्क बाँट कर वोटों का सौदा होता है जो हर प्रकार से निन्दनीय है। वर्तमान सजा हल्की है जिसे चौगुना किया जाना चाहिए।

भामा शाह की 468वीं जयन्ती (28 जून 2015)- आप जैन धर्म के अनुयायी थे। आप व्यापार करते थें आप परम देश भक्त और अदुभुत दानी थे। आपके पास स्वयं का तथा पुरखों का कमाया हुआ अपार धन था। आपने महाराणा प्रताप को 25 लाख रूपए (इस समय यह रकत कई अरब बैठेगी) तथा 20000 अशिर्फयाँ दान में दी ताकि वे अपनी सेना का पुर्नगठन करके खोए हुए क्षेत्रों को मुक्त करा सकें। महाराणा प्रताप ने आंखों में आंसू भरकर भामाशाह जैन को गले से लगा लिया।

महाराणा प्रताप ने अकबर के दरबार में कभी सिर नहीं झुकाया। उनकी कर्त्तव्य परायण पर पूरे देश को गर्व है। भामाशाह ने अपने पुत्र को आदेश दिया कि वह भी महाराणा प्रताप के पुत्र के साथ उन जैसा ही व्यवहार करें।

कोई भी संगठन, संस्था, अखबार आदि तभी सही प्रकार चलते हैं जब उनके पास भामाशाह जैसा दानवीर हो। इस समय अखिल भारतीय क्षत्रिय मंच और उसके मासिक अखबार खुली चुनौती के लिए उसके राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री गंगा सिंह राठौड भामाशाह की भांति दिल खोलकर आर्थिक सहयोग कर रहे हैं। उन्हें आधुनिक भामाशाह कहा जा सकता है। हम उनके उत्तम स्वास्थ्य और दानवीरता की खुले दिल से प्रशंसा करते हैं।

इन्द्र देव, संस्थापक काली चरण, अध्यक्ष

> आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। **—राजहंस मैत्रेय**

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्री रवि कुमार अर्न्जान प्रोपर्टीज एसोसिएट्स, बहा.	13100/-
श्रीमती रिटा चड्ढा एवं आर.के. चड्ढा जी राजौरी गार्डन, दि.	12000/-
श्री लखपत सिंह जी नागर ग्राम डालमिया, उत्तर प्रदेश	11000/-
कुमारी प्रवीण मैनेजर कैनरा बैंक प्रीतमपुरा, दिल्ली-	10000/-
श्री विजय कु. व जोगिन्द्र सिंह सु. स्व. श्री हरदेव सिंह,दि.	5100/-
श्रीमती सुमित्रा देवी पत्नी स्व. श्री लक्ष्मी जी, बहादुरगढ़	5100/-
श्रवण कुमार मखीजा 742 ए, सैक्टर-14, गुड़गांव, हरि.	5000/-
लाला राम प्रसाद जी अग्रवाल, अग्रवाल कॉलोनी, बहा	5000/-
श्री गुलशन कुमार जी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	4000/-
श्री ओ.पी. गुप्ता अशोक विहार दिल्ली	3100/-
चड्ढा परिवार राजौरी गार्डन दिल्ली	2500/-
श्री राजरानी चड्ढा जी राजौरी गार्डन, दिल्ली	2000/-
चारू जी राजौरी गार्डन दिल्ली	2000/-
श्री सिद्धार्थ चड्ढा जी राजौरी गार्डन, दिल्ली	2000/-
स्व. हवासिंह जी गढ़ी सांपला	1400/-
श्रीमती सविता दहिया नरेला, दिल्ली	1230/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सहरावत सेक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री दरबार सिंह जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती कृष्णा आर्या पत्नी श्री कृष्ण रखेजा गुड़गांव	1100/-
श्री रामकंवर जी ओहल्याण पत्नी श्री तालेराम जी सांपला रोहतक	1100/-
श्रीमती रवीता जी जाफरपुर, दिल्ली	1100/-
श्रीमती अनिता करोलबाग, दिल्ली	1000/-
माता रामदुलारी जी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र शर्मा जी अध्यापक कॉलोनी, बहा.	1000/-
श्रीमती माया मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़	500/-
श्री अभिमन्यु जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ झज्जर, हरि.	500/-
श्री रणवीर जी राणा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती विमला सिंघल उत्तम नगर, दिल्ली	500/-
श्री रामप्रताप जी आर्य नरवाना हरियाणा	500/-

बहादुरगढ़ प्राप्त दान

श्री ओमप्रकाश दहिया, श्रीमती राजदेवी विवेकानन्द नगर	50 किलो गेहूं
शिव मन्दिर शिवस्थल, बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
श्री राजसिंह राठी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	4 क्विंटल गेहूं
श्री श्यामलाल गुप्ता काठमण्डी बहादुरगढ़	2 क्विंटल गेहूं
श्री धनश्याम दास धन्नु अनाजमण्डी	1 बोरी
श्री देव रविन्द्र कुमार	1 बोरी गेहूं
श्री लक्ष्मी चन्द मुकेश	1 बोरी गेहूं
श्री मेघराम चन्द्रभान	1 बोरी गेहूं
श्री मातुराम जयप्रकाश	50 किलो गेहूं
श्री हरद्वारी रोशन	50 किलो गेहूं
श्री मांगेराम किशोरी	50 किलो गेहूं
श्री हीरालाल हरभान	50 किलो गेहूं
श्री लालाराम श्री भगवान	25 किलो गेहूं
श्री श्योप्रसाद जी निवास	800/- रूपये
श्री राम धनश्याम दास	1 बोरी गेहूं
श्री बनारसी दास फकीरचंद	1 बोरी गेहूं
श्री बनारसी दास जुगल किशोरी	1 बोरी गेहूं
श्री मित्तल ट्रेडिंग कम्पनी	50 किलो गेहूं
श्री रत्तन सिंह सोनी	1 बोरी गेहूं
श्री मार्केट कमेटी	1 बोरी गेहूं
अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी	1100/- रूपये
श्री डी.डी. बंसल खाद बीज	800/-
श्री बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद	1 बोरी गेहूं
श्री बंशीधर मनोहर लाल जी	50 किलो गेहूं
श्री विश्वनाथ जी आर्य सुपुत्र श्री राम प्रताप जी अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़	2 बोरी गेहूं
श्री राधेश्याम अशोक कुमार मण्डी	1 बोरी गेहूं
श्री संजय कुमार जी महावीर पार्क	30 किलो गेहूं
श्री मनोज कुमार बैंक कॉलोनी	40 किलो गेहूं
श्री सुरेश कुमार महावीर पार्क	40 किलो गेहूं
श्री सुबे सिंह प्रधान परनाला बहादुरगढ़	500/- रूपये, 1 बोरी गेहूं
ट्रक यूनियन परनाला रोड	4 क्विंटल गेहूं
दी शिव ट्रबो ट्रक यूनियन बादली रोड, बहादुरगढ़	5 क्विंटल गेहूं
श्री दयाकिशन जी राठी 8 विश्वा जटवाड़ा	1 क्विंटल गेहूं
श्री पवन कुमार सुपुत्र श्री समय सिंह सैनी, हसनगढ़	50 किलो गेहूं
श्री भगवान जसौर खेड़ी कबीर आश्रम, बहा.	1 बोरी गेहूं
श्री सत्यव्रत जी म.न. 9ए, 2383, सैक्टर-9, बहा.	50 किलो गेहूं

टीकरी कलां दिल्ली से प्राप्त दान

स्व. श्री बालादेवी धर्म श्री मा. करतार सिंह जी टीकरी	11000/-
श्री सुनील सुपुत्र श्री विरेन्द्र सिंह	1500/-
मदीपाल उत्तर	2 किलो गेहूं
श्री रिंकु सुपुत्र श्री आजाद सिंह	100/- रूपये
मा. श्री प्रकाश सुपुत्र श्री राम सिंह जी	500/-
श्री प्रिये सुपुत्र श्री दलेल सिंह	1500/- रूपये

प. सुरेश कुमार सुश्री चन्दगीराम	501/-
श्री उमेद मास्टर सुपुत्र श्री चिरण जी	1500/-
सुनील (पिंकी) सु. श्री ज्ञानचन्द	500/-
श्री लक्ष्मी नारायण सुपुत्र श्री जुगती	201/-
महाशय श्री रामफल जी आर्य सुपुत्र श्री बोधराम जी	1500/-
श्री सोनू	200/-
श्री सत्यवीर सुपुत्र श्री रणसिंह नम्बरदार	1500/-
श्री सतीश जी सैलपड़	251/-
श्री जयपाल सुपुत्र श्री दीवान सिंह	100/-
श्री जयसिंह जी बागड़ी	750/-
श्री चन्द्रपाल सुपुत्र श्री दीवान सिंह	100/-
श्री राजसिंह सुपुत्र श्री सुल्तान साहब	1 बोरी गेहूं
पं. श्याम सुपुत्र पं. श्री शिवदत्त जी	1500/-
श्री महेन्द्र फौजी सुपुत्र श्री छात्र सिंह	30 गेहूं
श्री राजेश सुपुत्र श्री फुलकंवार	2 कट्टे गेहूं
श्री सुरजभान शास्त्री	200/- रूपये
पं. नरेन्द्र सुपुत्र श्री रामफल जी	750/- रूपये
श्री सुरेश सुपुत्र श्री सन्तराम जी	500/- रूपये
जगत सुपुत्र श्री जगदीश	50 किलो गेहूं
श्री ईश्वर सिंह सुपुत्र श्री जीता जी	1 बोरी गेहूं
डॉ. हवासिंह जी	1100/- रूपये
श्री अमन सुपुत्र श्री श्री लाल जी	1100/- रूपये
मा. जगदेव सिंह सुपुत्र श्री रामकला	500/-
श्री सुरेश सुपुत्र श्री प्रताप सिंह जी	100/-
श्री बिल्लु सुपुत्र श्री जगदीश जी	1100/-
श्री बलवान सिंह सुपुत्र श्री स्वरूप सिंह	100/-
श्री सत्यपाल सुपुत्र श्री धर्मसिंह जी	500/-
श्री सुनील सुपुत्र श्री सन्तराम	20 किलो गेहूं
श्री महेन्द्र सिंह जी नम्बरदार	1500/-
श्री रोहतास सुपुत्र श्री रणसिंह नम्बरदार	511/-
श्री बिजेन्द्र सुपुत्र श्री रामफूल	500/-
श्री धर्मसिंह सुपुत्र श्री सूरत सिंह	500/-
श्री अजित सिंह जी	101/-
श्री चरण सिंह सुपुत्र श्री जगन सिंह	202/-
श्री धर्मबीर सुपुत्र श्री देशराज जी	101/-
श्री बलजीत सुपुत्र श्री ख्यालीराम जी	500/-
श्री बिजे सिंह सुपुत्र श्री रामपत सिंह	1100/-, 1 बोरी गेहूं
श्री धीर सिंह सुपुत्र श्री रामपत जी	1500/-
श्री रवि सुपुत्र श्री सुखवीर सिंह	40 किलो गेहूं
श्री अनिल सुपुत्र श्री रजेन्द्र	1500/-
श्री विजयपाल सुपुत्र श्री जिलेसिंह जी प्रधान	500/-
श्री दरियाव धर्मकांटा	3100/-
श्री सत्ते दुकानदार	100/-
श्री बालाजी रोड लाइन्स	1500/-
श्री सत्यपाल सुपुत्र श्री करतार सिंह	200/-
श्री गंगादत्त भारद्वाज भारद्वाज स्वीट	500/-
श्री तेजपाल सुपुत्र श्री जिले सिंह जी प्रधान	1500/-
श्री मंजीत थानेदार सुपुत्र श्री जयकिशन	500/-
श्री कुक्कु सुपुत्र श्री जयकिशन	15 किलो गेहूं
श्री हरनन्दी जी	1500/-
श्री सिंघराम सुपुत्र श्री रोहतास	1 बोरी गेहूं
श्री धर्मपाल सु श्री भूदेव जी	50 किलो गेहूं
श्री धर्मवीर जी	1 बोरी गेहूं
श्री रूपचन्द दुकान	100/-
श्री देवशंकर स्टोक	1501/-
श्री मेहरलाल सुपुत्र श्री रणजीत सिंह जी	2100/-
श्री आकश जी बॉडी बिल्डर	2100/-
श्री मोहित धर्मकांटा	1500/-
श्री धर्मपाल जी सुपुत्र श्री सुल्तान	1100/-
श्री महात्मा जय सिंह जी	1500/-
श्री सत्यवान जी	1500/-
श्री सुनील सुपुत्र श्री ईश्वर सिंह जी	1500/-
श्री अनिल दराल सुपुत्र श्री रामफल जी	1500/-
श्री नरेन्द्र मास्टर	1100/-
श्री नरेश कुमार सुपुत्र श्री मामचन्द	1100/-
कार्तिके सुपुत्र श्री रमेश कुमार दराल	3101/-
श्री प्रदीप दराल सुपुत्र श्री बिजेन्द्र सिंह दराल	1100/-
श्री महीपाल जी दराल वकील	11000/-
श्री धर्मपाल जी सिंडीकेट प्रोपर्टीज	2100/-
देशी, दिनेश सुपुत्र श्री अनुप सिंह जी	1100/-
तरूण सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह	500/-
श्री लम्बू ठेकेदार	500/-
श्री वीरेन्द्र सुपुत्र श्री सरदार सिंह	1500/-
श्री दर्शन सुपुत्र श्री रणजीत	750/-
श्री धर्मवीर सुपुत्र श्री राममेहर लगड़	501/-
श्री सत्यवान सुपुत्र श्री सत्यवीर	500/-
श्री हरपाल सुपुत्र श्री बलवीर	1 बोरी गेहूं
श्री चन्द्रपाल सुपुत्र श्री मांगेराम जी	1500/-
श्री रमेश जी सुपुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह	1500/-
श्री उज्जव सुपुत्र श्री दलेल सिंह	700/-
श्री रामनिवास (काला) श्री सुरत सिंह	80 किलो गेहूं

श्री जितेन्द्र सुपुत्र श्री दलेल सिंह 1 बोरी गेहूं
डॉ. फरखान अली 400/-
चौ. अजीत सिंह सुपुत्र चौ. मुंशीराम जी 5100/-
श्री जगदीश वर्मा 100/-
श्री सागर जी सुपुत्र श्री आजाद सिंह 80 किलो गेहूं
श्री कुलवीर (नीटु दलवीर) सुपुत्र श्री सत्यपाल 1500/-
श्री लव सिंह, अमत सिंह सैलपाड़ दादा मोहन सिंह सैलपाड़ 1111/-
श्री ईश्वर दत्त भारद्वाज सुपुत्र श्री भगवान दत्त भारद्वाज 511/-
श्री सत्यवीर सुपुत्र श्री चांदराम डागर, समसपुर, दिल्ली 1500/-
श्री इन्द्रजीत सुपुत्र श्री राजसिंह 750/-
श्री सतीश कुमार सुपुत्र श्री वैध देव शर्मा जी 2 क्विंटल
श्री रामकिशन जी सुपुत्र श्री बक्तावर सिंह गढ़ी वाले 1500/-

विविध वस्तुएं

श्रीमती रानी चड्ढा जी राजौरी गार्डन दिल्ली 20 किलो आटा, 20 किलो चावल, 5 किलो दाल
श्री सुरेन्द्र जी दहिया, 245, सैक्टर-6, बहा. 500/- रूपये, बजाज के 2 पंखे, 40 किलो आटा
श्री श्रवण कुमार आर्य आजादपुर डिपो गुड़गांव, हरि. 150 कापिया
फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कैमिकल्स पंजाबी बाग दिल्ली 200/- रूपये, 1 बैग वाशिंग पाउडर
श्री रामजी दास की स्मृतिमध्य परिवार द्वारा धर्मविहार, बहादुरगढ़ 5 किलो दूध, 4 किलो आम
कबीर आश्रम लाईनपार बहादुरगढ़ 55 किलो चावल, 30 किलो आटा, 1 समय का भोजन, बच्चों में साबुन वितरण
श्री कैलाश जी लखोटिया मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़ चावल 15 किलो, आटा 15 किलो, बिस्कुट पैकेट, देशी घी, 1 किलो, दाल 3 किलो
श्री भूपसिंह जी डबास शनि मन्दिर टीकरी दिल्ली 1 टीन सरसों तेल
प्रिंसीपल कर्ण सिंह आर्य डबास माजरा दि. अन्न संग्रह, 2500/- रूपये

विशिष्ट भोजन

श्री दीपक खोकर रावता मोड़ डाबर एन्कलेव जाफरपुर, दिल्ली 1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री वैद्य चन्दगीराम जैन विद्यार्थी अग्रवाल कॉलोनी, बहा. 30565/-
श्री रमन सुपुत्री श्री दर्शन मुनि आत्मशुद्धि आश्रम, बहा. 500/-
श्री आढती होशियार सिंह पुनिया, रामकंला कॉलोनी, बहा. 500/-

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

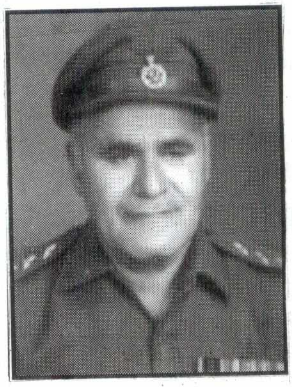

श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली 500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली 250/-
डॉ. पुष्पलता जी वर्मा, विकासपुरी नई दिल्ली 150/-
श्रीमंती प्रवीन मेहन्दीरत्ता जी विकासपुरी, नई दिल्ली 150/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल विकासपुरी, नई दिल्ली 100/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली 100/-

फर्रूखनगर आश्रम के लिए

श्री रामनाथ जी आहुजा विकासपुरी, नई दिल्ली 500/-

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

श्री सुरेन्द्र कुमार जी अग्रवाल बहादुरगढ़ 500/-
श्री रामजीदास की स्मृति मध्य परिवार द्वारा धर्मविहार,बहा. 2200/-
श्री सत्संग मण्डली, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1100/-
महावीर मन्दिर मैन बाजार, बहादुरगढ़ 4 टीन सरसों तेल, दाले

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जून 2015 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो ओ३म् आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र

स्वामी धर्ममुनि जी

आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय क्रियात्मक

आचार्य राजहंस जी

"ब्रह्ममेधा" ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

सोमवार 22 जून 2015 से रविवार 28 जून 2015 तक

यज्ञ ब्रह्मा-स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

योगनिर्देशक-आचार्य राजहंस मैत्रेय, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण:- योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, बहादुरगढ़

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

❑ तनावपूर्ण वातावरण में सुखद व प्रसन्नता पूर्ण जीवन के लिए। ❑ दु:ख व सुख के विज्ञान की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जानने हेतु। ❑ पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम व सौहार्द की स्थापना के लिए। ❑ आधुनिक व्यवस्था में स्वातन्त्र्य पूर्ण जीवन के लिए। ❑ प्रभु से सहज, सरल सम्मिलन के लिए।

प्रवक्ता: आर्य तपस्वी सुखदेव जी (दिल्ली), आचार्य खुशीराम जी (दिल्ली), स्वामी रामानन्द सरस्वती, आचार्य रविशास्त्री (आश्रम), वैदिक प्रवक्ता: पं. शिवनारायण जी (रोहिणी, दिल्ली)

भजनोपदेशक: संगीताचार्य लक्ष्मणानन्द रामानन्द (नरेला), पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक (झज्जर), योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी

प्रात: 5 बजे से 7 बजे तक	-	ब्रह्ममेधा ध्यान का क्रियात्मक प्रशिक्षिण एवम् आसन प्राणायाम
प्रात: 7.30 बजे से 10 बजे तक	-	यज्ञ, भजन, प्रवचन
11 बजे से 12.30 बजे तक	-	योगदर्शन स्वाध्याय
3 बजे से 5 बजे तक	-	यज्ञ, भजन, उपदेश
6 बजे से 7 बजे तक	-	ब्रह्ममेधा ध्यान साधना
8 बजे से 9 बजे तक	-	हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन एवं शंका समाधान

शिविर उद्घाटन: सोमवार 22 जून 2015 को सायं 4 बजे

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजक: वानप्रस्थी ईशमुनि, मो. 9812640989, राजवीर सिंह जी आर्य

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी
मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195

श्री सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट

श्री कन्हैया लाल जी आर्य
उपप्रधान ट्रस्ट

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्टी

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

जून 2015

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-1245

सेवा में –

1 आर्य सन्देश साप्ताहिक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
15 हनुमान रोड़ नई दिल्ली
पि. 110001

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक यज्ञ योग साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ जिला-झज्जर, हरियाणा ट्रस्ट द्वारा संचालित

- गुरुकुल आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में सदाचारी, मातृपितृ भक्त, राष्ट्रभक्त आदि संस्कारों से जीवन निर्माण बनाने हेतु अपने बच्चों को प्रवेश दिलाएं।
  सम्पर्क करें- 09416054195, 09813754084, 09896578062
- गुरुकुल अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रूखनगर नगर, गुड़गांव, हरियाणा में प्रवेश प्रारम्भ हो चुका हैं। अपनी सन्तानों को योग्य संस्कारित एवं विद्यावान बनाने के लिए सम्पर्क करें।
  सम्पर्क करें- 09991251275, 09812640989, 09416054195, 09896578062, 09813754084

योग दर्शन के प्रकाशनार्थ सूचना

महर्षि पतंञ्जलि प्रणीत योगदर्शन पर अनेक व्याख्याएं एवं भाष्य उपलब्ध हैं। फिर भी योग ऐसा जटिल एवं अनुभव जन्य विषय है कि योग दर्शन के सूत्रों की व्याख्या की अपेक्षा बनी रहती है। मैं भी योग विषय में लम्बे समय से लगा हुआ हूँ और साधनारत हूँ। मुझे भी योग विषयक अनुभव हैं। अतः कई सज्जनों के आग्रह पर स्वयं की लिखने की रूचि न होते हुये भी, योग दर्शन के सूत्रों पर स्वतन्त्र और संक्षेप में मनोवैज्ञानिक, सरल व अनुभव के आधार पर व्याख्या लिखी है। पुस्तक छपने के लिए तैयार है। दानी सज्जनों से निवेदन है कि अपने किसी व्यक्ति की स्मृति में छपवाकर उनकी स्मृति चिरस्थायी बनायें। 1000 प्रतियों की लागत लगभग 50000/- रूपये आयेगी। दानी महानुभावों का रंगीन चित्र पुस्तक में छापा जायेगा। आशा है दानी सज्जन योग के प्रचार प्रसार में दान देकर पुण्य के भागी बनेंगे।

– राजहंस मैत्रेय, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम, मो. 9813754084